230
808
H
P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1301/10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं॰ Acc. No. 808

891.431
C 395

हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला का चतुर्थ पुष्प

ॐ

स्वराज्य-गीताञ्जली

(तृतीय भाग)

रचयिता—

कविरत्न श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण

सम्पादक—

साहित्याचार्य्य श्री पं० सोमदत्तजी शर्मा महोपदेशक

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा—
लहरी प्रेस काशी में मुद्रित।

हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला का चतुर्थ पुष्प

॥ ॐ ॥

वन्देमातरम्

स्वराज्य गीतांजली।

तृतीय भाग

रचयिता—

कविरत्न श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण

संपादकः—

साहित्याचार्य्य श्री पं० सोमदत्तजी शर्मा महोपदेशक

प्रकाशकः—

"हिन्दी नवयुग" ग्रन्थमाला कार्य्यालय

काशी

प्रथमावृत्ति १०००

सर्वाधिकार स्वरक्षित है

मूल्य ।)

१९२३

निवेदन

प्रिय पाठको !

गत मास में मैंने आपकी सेवा में "स्वराज्यगीताञ्जली" प्रथम तथा द्वितीय भाग उपस्थित किये थे, जिन्हें आप महानुभावों ने आशा से अधिक अपना, कर, उसका तृतीय भाग भी प्रकाशित करने का अनुरोध किया। बस यही कारण है कि आप महानुभावों की अभिलाषानुसार आज "स्वराज्य गीताञ्जली" का तृतीय भाग भी आपको भेंट करता हूं। आशा है पूर्ववत् इसे भी अपना मेरे उत्साह को बढ़ावेंगे।

आपका

"शैलेन्द्र"

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 808
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

ॐ

स्वराज्य-गीतांजली

(तृतीय भाग)

चरखा तथा स्वदेशी प्रचार

मुसद्दस स्वदेशी

[१]

हर एक के दिल में हो प्रभो प्यार स्वदेशी ।
सरकार स्वदेशी हो हो दरबार स्वदेशी ॥
हर शहर गली क़स्बा हो बाज़ार स्वदेशी ।
आवाज़ दें अब हर दरो दीवार स्वदेशी ॥
करतार हो संसार में विस्तार स्वदेशी ।
सरकार स्वदेशी हो हो दरबार स्वदेशी ॥
आंखों से मेरे गुज़रें तो अख़बार स्वदेशी ।
कानों में मेरे आयें समाचार स्वदेशी ॥
हर कस हो दिलो जाँ से ख़रीदार स्वदेशी ।
हर फ़र्द बशर होवे तरफ़ दार स्वदेशी ॥
करतार हो संसार में विस्तार स्वदेशी ॥

मुसलिम जो हों तो सरपै हो दस्तार स्वदेशी ।
गर होयें बिरहमन तो हो जुन्नार स्वदेशी ॥
क्षत्री जो हों तो हाथ में तलवार स्वदेशी ।
मेमार स्वदेशी हों हों अबज़ार स्वदेशी ॥
ग़ैरों के गुल से अपने भले ख़ार स्वदेशी ।
दिल से किसी के खूब शवेतार स्वदेशी ॥
सद हैफ़ जो दुनियां में थे ज़रदार स्वदेशी ।
वह आज हुये मुफ़लिसो नादार स्वदेशी ॥
भारत में थे मालिको मुख्तार स्वदेशी ।
बुरी सम्त से हैं आज गिरफ्तार स्वदेशी ॥
पर शुक्र नज़र आते हैं आसार स्वदेशी ।
हर फ़र्द बशर करते हैं इज़हार स्वदेशी ॥
ठरावे सज़ावार भी ऐयार स्वदेशी ।
पर फिर भी स्वदेशी करें इज़हार स्वदेशी ॥
अब अहद से टलते नहीं ज़िनहार स्वदेशी ।
ले लेंगे वह जिसके हैं तलबगार स्वदेशी ॥
कब तलक वो कितना सहें आज़ार स्वदेशी ।
हैफ़ "शैलेन्द्र" हैं बेज़ार स्वदेशी ॥

विदेशी चीजों का बहिष्कार

[ग़ज़ल २]

टाई जापां की न इटली का रूमाल अच्छा है ।
जो बने अपने वतन में वह माल अच्छा है ॥
मुझे मतलूब नहीं चीन का ज़रीं सागिर ।
मेरे भारत का मुझे जामे सिफ़ाल अच्छा है ॥

ओढ़ सक्ता नहीं बर्लिन के दुशाले को कभी।
मुझको मिल जाय जो कश्मीर का शाल अच्छा है॥
तश्तरी मग़रबी सिलवर की करूं क्या ले कर।
घर में मौजूद है कांसी का जो थाल अच्छा है॥
हमको राहत है फ़क़त हिन्द की खुश रंगी पै।
हो अगर पैरिसो लन्दन का जमाल अच्छा है॥
जिन ख्यालातों से फैली हैं विदेशी चीज़ें।
उनपै गर हिन्द में आजाय ज़वाल अच्छा है॥
लक्ष्मी जाने न पायेगी तुम्हारे घर से।
हिन्दुओं सीखलो सनअ़त का क़माल अच्छा है॥
ता अबद दुनियां में रोशन रहे भारत का तिलक।
मादरे हिन्दका यह एक भी लाल अच्छा है॥
देश सेवा में जो आये वह मुसीबत अच्छी।
ख़िदमते क़ौम में हर रञ्जों मलाल अच्छा है॥
मशरिक़ी कहता है ख़ालिक़ की इबादत बेहतर।
मग़रिबी को है तक़ाज़ा ज़रोमाल अच्छा है॥
सब ख्यालात बुरे हैं मेरे नज़दीक फ़लक।
इक फ़क़त मुल्क की ख़िदमत का ख्याल अच्छा है॥

स्वदेशी प्रतिज्ञा

[कव्वाली ३]

जो दिल में दावा है देश का तो, कभी न गैरों का माल लेंगे।
मज़े में मोटिया पहिन के माला, स्वदेश का हम जपा करेंगे॥१॥
हम उनके बच्चे हैं जन्म भर जो, किसी के कर तर न कर धरे हैं।
अगर जो नौबतयूं आगई तो, गले पै खंजर को रख मरेंगे॥२॥

हमारी कारीगरी को चौपट, किये हैं बरवस विदेश वाले।
गुलाम हमको बनाये उनको, हुनर से अपने उजाड़ देंगे ॥३॥
अरे कलेजा! न खून खोलेगा, तेरा ऐसे विपत से अब भी।
सहे बहुत अब कहा तलक तू, सहैगा यम ये न दम धरेंगे ॥४॥
यूं दिन दहाड़े सड़क पर नाहक, हमारी बहिनों के तन से कपड़े।
पकड़ के ज़ालिम ने खैंच डाले, कभी न तन पर उसे धरेंगे ॥५॥
अगर हमारा यह वस्त्र होगा, तो क्या किसी की यूं ताब होगी।
जो ताक देंगे नज़र उठाकर, तो धूल आंखों में झोंक देंगे ॥६॥
जो शर्म इज्ज़त वो देश की है, तो दिल से कहना यूं अय हरि से।
रहेंगे नंगे मगर न साटन, कभी न कपड़ो के मोल लेंगे ॥७॥

स्वदेशी के विषय में देश महिला की पुकार

[दादरा कहरवा ४]

मत लई आ चुंदरिया हमार विदेशी हो बालमा ॥ टेक० ॥
है हुक्म गांधीका अब चरखा मंगाइये।
कपड़ा बनानेके लिये करघा भो लाइये॥
करो देशी पै तनमन निसार ॥ १ ॥ टेक० ॥
दौलत गई सब ग़ैर मुमालिक को हमारी।
बाक़ी जो है अब उसके भी जाने की तयारी॥
फिर रोओगे धुनि धुनि कपार ॥ २ ॥ टेक० ॥
कुड़ता फितुही मिरजई देशी बनाइये।
बच्चों को फेल्टकैप न हरगिज पहिनाइये॥
बचे रोज़ाना सत्तरह हज़ार ॥ ३ ॥ टेक० ॥

ज़ेवर मेरा कर दीजिये गांधीके हवाले।
जिससे वह वीर हिन्द की इज्जत को बचाले॥
हिन्द महिला की है ये पुकार॥ ४॥ टेक०॥

महिला का स्वदेशी व्रत

[झूमर ५]

साड़ी ना पहनब बिदेशी हो पिया देशी मंगादे।
देशी चुनरिया, देशी ओढ़नियां, देशी लहंगवा सिलादे हो॥
पिया देशी मंगादे॥ साड़ी०॥
देशी चोली, देशी गोली देशी ही रङ्ग में रंगा दे हो।
पिया देशी मंगा दे॥ साड़ी०॥
देशी टीकुलिया, देशी बिंदुलिया, देशीही चुड़िया मंगादे हो।
पिया देशी मंगादे॥ साड़ी॥

स्वदेशी–व्रत

[ग़ज़ल६]

पले हैं देश में हम हैं, हमारा तन बदन देशी।
मरें हम देश पर जी से, बनायें प्राण मन देशी।
जियें जब तक सदा धारण, करें भोजन वसन देशी।
मिले मिट्टी में मिट्टी जब, मिले हमको कफ़न देशी।
न भूले देश अपना ध्यान, हर दम हो स्वदेशी का।
न हों अज्ञान ऐसा ज्ञान, हरदम हो स्वदेशी का।
मधुर मधु मानकर बहुधा, विषम विष लूट लेते हैं।
ग़ज़ब है यह सर आंखों पर, विदेशी बूट लेते हैं।

बना देते हैं वह रेशम, जो हमसे जूट लेते हैं।
किसी हिकमत से वह अन्धा, बना कर लूट लेते हैं।
लुटायें घर ग़रीबी में, ये क्या है आप ही समझें।
विदेशी वस्तु का व्यवहार, करना पाप ही समझें।

विदेशी लूट कर हमको, हैं माला माल बन बैठे,
यही करनी हमारी थी, कि हम कंगाल बन बैठे।

कृपा की ओट में कैसे, कुटिल-जन काल बन बैठे;
रहें हम बदनसीबी में, वो बा अक़बाल बन बैठे।
फले हैं जिसमें विष फल यह, हमारी बेल बोई है।
ये किश्ती हाय हमने अपने, हाथों से डुबोई है।
ग़नीमत है जो अब भी, होश लोगों ने संभाला है।

ये समझे हैं विदेशी रम, नहीं है विषका प्याला है।
पिला कर दूध हमने, आज तक काले को पाला है।
वही फुफकारता है आस्तों में, डसने वाला है।
सुलाना मोह-निद्रा में, ग़ज़ब है क़हर है इस का।
स्वदेशी के सिवा मन्तर, नहीं वह ज़हर है इस का।

केंचुल झाड़ने वाले, ये केंचुल से भी बदतर हैं।
जिसे तू नैनसुख कहता है, वह तो दुःखका घर है।
हम उतने पांव फैलायेंगे, जितनी लम्बी चादर है।
हमारे वास्ते अब बढ़के, मख़मल से भी खद्दर है।

गुलामी की अलामत हम, बदन पर रख नहीं सकते।
भरोसा हो स्वदेशी का, विदेशी का सहारा क्या?
गुज़ारा देश से होगा, हमारा क्या तुम्हारा क्या।
विचारो तो ज़रा मन में, बिगाड़ा क्या संवारा क्या।
नहीं क्या तुम स्वदेशी हो, नहीं है देश प्यारा क्या।

नहीं स्वाधीनता की भी सनेही! चाह क्या तुमको।
स्वदेशी पर मिटे कितने, नहीं है आह क्या तुमको।

स्वदेशी के हित पति से देशभक्त महिला की प्रार्थना

[भजन ७]

वरजूं पिया ग़ैर का न लैहो तुम सारी॥
लाज जाय, धरम जाय, हंसिहैं सब नारी।
फूहर घरनी है इनकी मरद हैं अनारी॥
अनकर दिन चारका है आख़िर अंधियारी।
उस पर भी रोब आज गांठते भिखारी॥
आपन पट था वहां न तिलभर घसकारी।
सभा में दुशाशन ने खैंच खैंच हारी॥
तन मन है खून वही अग्रहरि बिचारी।
एक हुनर के बिना पत जात है मुरारी॥

जागो

[भैरवी ८]

जागहु भारत वासी अब निशि बीति गई ॥टेक॥
दुःख घटा जब घेरेहु चहुदिशि, नीति अनीति भई।
परदेशी भारत के रिपु भए, उनकी मति डूब गई ॥अबनिशि॥
गान्धी तबहि जगायऊ सबको, चहुंदिशि धूम भई।
कछु जागे कछु आंखिन मींजत, आलस छाय रही॥अबनिशि
जागहु भाई तुम्हें जगावत, लाला, बन्धु अली।
सुनहु पुकार 'शैलेन्द्र' की अब तुम, बातें होगीं भली ॥अब०॥

चरखा स्तोत्र

[दादरा ६]

चल २ मेरे चर्खे प्यारे ।
पड़ी भंवर में भारत नैया तूही प्यारे किनारे ॥
जैसा तेरा मान घटाया, वैसा फल भी आगे आया ।
माल विदेशी ने रुलवाया, फैशन ने कंगाल बनाया ॥
अन्धकार में पड़े हुवे थे अब तक भारत वासी सारे ॥ १ ॥
पड़ी ठोकरें जब मन मानी, सूझ पड़ी अपनी नादानी ।
अब तेरी महिमा है जानी, अब न तुझे भूलेंगे ज्ञानी ॥
सुख का सच्चा साधन बनजा अश्वासन का पुंज पसारे ॥ २ ॥
तार एकता के गुथ जावें, श्रीमतियाँ तुझको अपनावें ॥
नौ साहस से साज सजावैं, विभव वढ़ावै आगे आवें ॥
पाश दासता की कटजावे, चमकादे सौभाग्य सितारे ॥३॥
तेरी तानों का भन्नाटा, दूर करे जग का सन्नाटा ।
भरे स्वदेशी का भन्नाटा, रहे न भारत गीला आटा ॥
मारे २ फिरैं न कोई पूर्व प्रभा के खुले पिटारे ॥ ४ ॥
समझे तेरी सभी महत्ता, मोटा सूत जमावे सत्ता ।
हिल जावें फैशन के पत्ता, कर दारिद्र दूर अलवत्ता ॥
भारत की भावी उन्नति की हैं तुझपै सब आशा धारे ॥ ५ ॥

चरखा महात्म

[धमार १०]

सुख चाहो तो भाई चलाओ चरखा । टेक ॥
चरखा चलावो, सूता निकालो ।
सूते से अपना बिनावो कपड़ा ॥ सुख ॥

देशी बांगा, देशा ही सूता।
देशी यह कपड़ा बने सस्ता॥ सुख॥
ना केहु मांगहु, ना केहु जांचहु।
ना कोई तुम्हे लगावे थपरा॥ सुख॥
चरखा तुम्हारो, दुःख नशावे।
सात समुद्र लगावे धड़का॥ सुख॥
बैठि "शैलेन्दर" दिन न वितावो।
छाती पै तुम्हारे चले सरपा॥ सुख॥

[धमार ११]

उठ भारत गान्धी मिलन आये॥ टेक॥
गान्धी के हाथ सत्य पिचकारी।
शान्ती को मंत्र जपत आये॥ उठ भारत॥
लाला, दास, अली बन्धु गण।
संगहि संग सदा धाये॥ उठ भारत॥
अब कुराज संस्कार करन को।
आजादी का गान गाये॥ उठ भारत॥
सहन करत हैं कष्ट अनेकन।
"शैलेन्द्र" सब मन भाये॥ उठ भारत॥

[होली १२]

नाथ दया मय होहु सहाई॥ टेक॥
भारत में दुःख घटा प्रभु आय गई है छाई।
प्रजा दुखी अब भई यहां पर, शाशक नीति डिगाई॥
घोर कुरीति मचाई॥ नाथ॥

रक्षक आज बने भक्षक हा !, कासे कहुँ अब जाई ।
नाथ तुम्हारी शरण अब आयो, लेहु गुसांई बचाई ॥
दुहाई तुम्हारी दुहाई ॥ नाथ ॥
गान्धी, लाला, अलीबन्धु, अरु दासहि जेल पठाई ।
हाय ! महाप्रभु ! कौन महाजन ?, इनमें जब जड़ताई ।
हमें अब देहु बताई ॥ नाथ ॥
द्वापर में तुम नाथ पार्थ से, कीन्ह प्रतिज्ञा जाई ।
जब जब भीर पड़ी सन्तन पै, होवत आये सहाई ॥
प्रभु ! अब किम सुधि बिसराई ॥ नाथ ॥
नाथ बिनय "शैलेन्द्र" करत यह, दुःख परे बिलखाई ।
भारत वासिन की लाज रखो प्रभु !, हिन्द को लेहु बचाई ॥
महा दुःख राशि हटाई ॥ नाथ ॥

चरखा महात्म

[ठुमरी १३]

मेरा प्यारा सुदर्शन चरखा ॥ टेक ॥
चरखा हमारा दुक्ख नशावे,
देता बता सीधा रस्ता ॥ सुदर्शन ॥
चरखे की घन घन रण की भेरी,
दुश्मन की छाती पर पड़ता धड़कता ॥
चरखा स्वदेशी ताप हमारी,
गोला निकले खूब सस्ता ॥ सुदर्शन ॥
चरखे का गोला चोट लगावे,
पार समुद्र के इसका झपटा ॥ सुदर्शन ॥
क्या है तमाशा देखो "शैलेन्द्र"
होगा स्वराज्य अलबत्ता ॥ सुदर्शन ॥

[ठुमरी १४]

विदेशी के तजो प्यारे भारती भैय्या ॥ टेक ॥
याहि विदेशी के तीन रखैया ।
बाबू औ हाकिम व मद के पिवैया ॥ विदेशी ॥
हिन्दू मुसलमां सब मिलजावो ।
प्रेम बढ़ाओ बनो दोनोँ भैय्या ॥ विदेशी ॥
भाई भाई में रार करो नहीं ।
फेंको अदालत में अब न रुपैया ॥ विदेशी ॥
धारण करहु अब वस्त्र स्वदेशी ।
ताकत आस तुम्हारी अब भैय्या ॥ विदेशी ॥
"शैलेन्द्र" उठहु पग न हटावहु ।
भव सागर के तुमहि तरवैय्या ॥ विदेशी ॥

सुदर्शन चरखा

[ठुमरी १५]

मेरी लग गई सुदर्शन से प्रीति, हमारो कोई कहा करिये ॥टेक॥
बांगा बोवाय के रुई उपजाऊँ, सोची ये मैंने सुनीति ॥हमार कोई
चरखे से रुवे का सूता बनाऊ, होगा वह पावन पुनीति ॥हमार
सूते का करघे में खद्दर बनाओ, मानो मानो सही मेरे मीत ॥हमार
गान्धी के बचनों में तन मन लगादो, मेरी यह सच्ची प्रतीत ॥ हमार
गोले बन्दूकों से कुछ भी नहीं डर, तोपों से होऊ न भीत ॥हमार
बैठो नहीं चुपचाप "शैलेन्द्र" होगी तुम्हारी ही जीत ॥हमार॥

[ग़ज़ल १६]

अय भाइयो अपनी दशा की ओर अब तुम देखलो।
क्यों सो रहे हो इस तरह टुक आखें खोलो देखले॥
वे शहीदाने वतन जो बागे जलियां में मुये।
स्वर्णाक्षरों में नाम उनका जगमगाता देखलो॥
एक दिन मगर सभी को होयगा निश्चय सही।
फिर होके अपने देशपर कुर्बान मरकर देखलो॥
मारने का नाम हम भारती सीखे नहीं।
सब कुछ सहन करते रहे बाकी रहा जो देखलो॥
डेढ़ सौ बीते बरस रहते अमल इङ्गरेज में।
पर ऐब लाखों घुसगये उस सभ्यता से देखलो॥
बाप दादों के चलन को छोड़कर मिस्टर बने।
फिर अधकटा ही कोट है पतलून पूरा देखलो॥
तुम सीखलो उनसे तरक्की देशकी करनो सही।
पर कीच तन "शैलेन्द्र" ऊपर क्यों लगावें देखलो॥

चरखा की प्रतिज्ञा

[दादरा १७]

मेरे चरखे का टूटे न तार, हरदम चलाता रहूं।
भारत के संकट पै तन, मन, लगादूं,
प्राणों को करदूं न्योछार, खद्दर बनाता रहूं।
खद्दर के कपड़े स्वदेशी बनाके,
विदेशी में ठोकर मार, चर्खी घुमाता रहूं।
गान्धी के बचनों को पूरा करादूं,
भारत को लूंगा, उबार, माला चढ़ाता रहूं।

चुटकी से तागे को बट करके जोड़ूँ,
हरिका बनाऊँ में हार, फरही दबाता रहूं।
लेंगे इसी से "शैलेन्द्र" स्वराज्य अब,
होंगे गुलामी से पार, मङ्गल मनाता रहूं।
विदेशी कपड़े के होंगे हवन अब,
करदें जला करके छार, आहुती चढ़ाता रहूं।

चरखा

[चैता १८]

चरखा वाले रे हमारो मन हरिगयो हो रामा ॥ टेक ॥
छांड़ि विदेशी, धारि स्वदेशी।
हमारो मन भरि गयो हो रामा ॥चरखा वाले॥
देश विदेशन नाम तुम्हारो।
शत्रुन हिय डरिगयो हो रामा ॥चरखा वाले॥
करनी तुम्हारी कीरति जग मग।
अरि गण मन जरि गयो हो रामा ॥चरखा वाले॥
गान्धी बचन चित्त धारि "शैलेन्द्र"।
तब दुःख सब टरिगयो हो रामा ॥चरखा वाले॥

जेल रहस्य

रंजो मुहिन पहिले

[गज़ल १६]

खुशी के दौर दौरे से है यहां रंजो मुहिन पहिले।
फलैगा इण्डिया पीछे बसैगा एण्डमन पहिले॥
हमें दुःख भोगना लेकिन हमारी नस्ल सुख पाये।
यह दिल में ठानलें अपने यहां के मर्दोज़न पहिले॥
हमारा हिन्द भी फूलै फलेगा एक दिन मित्रो।
मिलेंगे ख़ाक में लाखों हमारे गुलबदन पहिले॥
हमारा हिन्द भी ले जायगा यूरोप से शवकत।
तिलक जैसे मुहिव्वे क़ौम होंगे वे वतन पहिले॥
सदा उन वीरों की जय हो जिन्होंने यह दिखाया है।
कि शुभ कर्मों में होते हैं हमेशा सर क़लम पहिले॥

देश भक्तों की काले पानी यात्रा करते समय, भारत माता को धीरज

[सोहनी २०]

हाय! जननी जन्मभूमि छोड़ कर जाते हैं हम।
बस नहीं चलता है कर मल २ के पछताते हैं हम॥
अय! नदी नालो दरख़्तो पक्षियो मेरा क़सूर।
माफ कर दो जोड़ कर-कर तुमसे बतलाते हैं हम॥

कुछ भलाई भी न हम तुम सब की खातिर कर सके।
इस लिए तजते तुझे हरबार शरमाते हैं हम ॥
हाय! माता प्राण हम तजते जो तेरी गोद में।
स्वर्ग को जाते न इसमें झूठ बतलाते हैं हम ॥
स्वर्ग से बढ़ कर के माता सुख हमें यहां पर मिला।
इसलिए तजते तुझे हरबार घबड़ाते हैं हम ॥
हाय! जननी जन्मभूमि बहुत दुःख तुझ को दिया।
कर क्षमा अपराध बारम्बार शिर नाते हैं हम ॥
मौका पा सन्तान भारत वर्ष फिर आकर तुझे।
दुश्मनों से छीन लेंगे खौफ़ कब खाते हैं हम ॥

हमतो जाते हैं अब जेलखने

[२१]

भारतमाता को दुःख से बचाने, हमतो जाते हैं अब जेलखाने।
जालिम डायर ने जो कुछ किया है। सारे पंजाब को दुःख दिया है
उन मज़ालिम का बदला चुकाने ॥१॥ हम तो
जिनको पेटों के बल था चलाया। जिनको धूपों में मीलो दौड़ाया
उन गरीबों को सब्र दिलाने ॥ २ ॥
औरतों तक पै हन्टर चलाये। उनके मुंह लकड़ियों से खुलाये
उनकी आहों की ताकत दिखाने ॥ ३ ॥
छोटा बच्चा मदन जिसने जाया। जालियां वाले में जो था खपाया
उसके ज़ख्मों पै मरहम लगाने ॥ ४ ॥

कैसे कैसे हैं हा! जुल्म ढाये। बम जहाजों से हम पर गिराये ॥
सब्र से सब खुदा को सुनाने ॥ ५ ॥
जाके सुल्तान पर हाथ मारा। सर से ताजे ख़िलाफत उतारा ॥
इस जहालत का जलवा दिखाने ॥ ६ ॥
अपने वादों से मुंह कर के काला। जिसने इस्लाम पै हाथ डाला ॥
उनको इन्सानियत कुछ सिखाने ॥ ७ ॥
हुक्मे अल्लाह को भी मिटाया। फ़तवा उलमा का जब्त कराया ॥
ऐसे ज़ुल्मों को जग से मिटाने ॥ ८ ॥
लाखों गऊवों पै छुरियां चलावें। रोज़ फ़ौजों में जाकर खिलावें ॥
गऊ माता का कष्ट हटाने ॥ ९ ॥
कथा २ आपस में झगड़े मचाये। रोज हिन्दु मुसल्माँ लड़ाये ॥
यह तुम्हारी शरारत जताने ॥ १० ॥
सिक्ख भाइयों को कैसा सताया। गुरुद्वारों पै ताला लगाया ॥
हक़्त आला को सब कुछ सुनाने ॥ ११ ॥
सारे भारत को बेहद सताया। दो २ दानों को आज रुलाया ॥
भूखे देश को रोटी दिलाने ॥ १२ ॥
अपना हाकिम है तूंही खुदाया। इस्तग़ासा तेरे पास आया ॥
अपना दीनी मुक़दमा लड़ाने ॥ १३ ॥
बैठ कर दिल से आहें भरेंगे। आगे तेरे शहादत धरेंगे ॥
क़ैद सरकार को ही कराने ॥ १४ ॥
शेर सच्ची है अपनी गवाही। है गवाह भी खुद ही इलाही ॥
चर्ख तुझको जहां से मिटाने ॥ १५ ॥

जेलखानें में ।

[ग़ज़ल २२]

यही होगा यही होता रहा है हर ज़माने में ।
कि गूंजी है सदाये हक़ हमेशा जेल खाने में ॥
सदाक़त के यही मानी है मौज़ू इस जमाने में ।
कि चक्की पीसिये और चैन कीजे जेलखाने में ॥
पछत्तर लाख इक बेकार मद में खर्च कर देंगे ।
रियाया के लिये कौड़ी नहीं जिन के खजाने में ॥
ये हुल्लड़ इस कदर हड़बौंग इतनी चपकलिश तोवा ।
तेरी महिफल में हूँ या किसी भटियार ख़ाने में ॥
वे मुझको फिर वफ़दारों के मद में गिनने वाले हैं ।
ये कैसा इनक़ाब आने को है यारब जमाने में ॥
शरीफों को अरू से जेल की निस्बत से शादी है ।
कि वह भी नजीब और यह भी है अच्छे घराने में ॥
रिहाई मिल गई जब बन गये सरकार के मुखबिर ।
सजा पाई थी जिसने एक दिन जूते चुराने में ॥
वे जब आयें कमस कम इतनी आज़ादी तो मिल जाये ।
न हो हड़ताल पर लैसन्स कोई इस जमाने में ॥
जिसे देखो दुआयें मांगता है जेलखाने की ।
जिसे देखो तेरे गेसू का आशिक है जमाने में ॥
नई हद वन्दिया होने को है आइने गुलशन में ।
कहो बुलबुल से अब अन्डे न रक्खे आशियाने में ॥
खुदा जाने मियां अहमक कहां मार आये हैं डाका ।
कि आधी रात से जकड़े हुवे बैठे हैं थाने में ॥

जेल स्तुति

[कव्वाली २३]

धन्य हो तू जेल देवी धन्य तेरी शान है।
तेरी रहमत वो दया हम दिल जलों की जान है॥
तुझसा अपना वो मेहरवाँ दूसरा दीखता नहीं।
तेरे दर्शन और जियारत का हमें अभिमान है॥
तूही रहबर ज्ञान दाता जां निसार हबीब है।
बेपनाहों की तूही गुलज़ार गुलिस्तान है॥
जिनको छूता डोर,नागिन उनसे रहती दूर पर।
जेल से छूटे हुए तो खौफ के मेहमान हैं॥
हम सरीखे बेदिलों की दिल की अनवर हो तूही।
क्यों न हों मुश्ताक हम तेरे जो तूहीं त्राण है॥
आफतें जिस वक्त में ढाती हैं शिर पै आके तू।
ढाल बनजाती तेरा हम पर बहुत एहसान है॥
देवकी वसुदेव जी की प्राण से प्यारी अहो।
कृष्ण जग जीवन का जननी तूही जन्मस्थान है॥
तिलक प्राणाधार भारत गान्धी नर देव वो।
लाजपत अरविन्द शौकत का यह बासस्थान है॥
दासता से मुक्त होने के लिये यह ठाम है।
पूजना दिल से इसे यह सर्वशक्तिमान है॥
जेल काबा जेल मथुरा जन्नतो सुरधाम है।
जेल के यात्री को आवागमन से आमान है॥
जेल से सम्मान है वो जेल से कल्याण है।
अग्रहरि सुख शान्ति पाने का यही सामान है॥

नेता हमारे जेल गये सब आज

[बसन्त फाग २४]

भारतवासी नेता हमारे जेल गए सब आज ॥ टेक ॥
काहे को गान्धी जेल गए हैं ?, कौन किये अपकाज ? ॥ १ ॥
हिन्दोस्तानी बुद्धि, कला, बल नाश भये सब आज ॥ २ ॥
मोहन गान्धी राह बतावत, राखत भारत लाज ॥ ३ ॥
मजहर, लजपत, नेहरू, अजमल, बन्धु अली अरु दास ॥ ४ ॥
स्वार्थ सबनि मिलि त्यागि दियो हैं, बन्दी यही बिधि आज ॥५॥
नाथ विनय "शैलेन्द्र" करत यहि, शीघ्र हो होय स्वराज ॥६॥

[होली २५]

जेल गए सब वीर हमारे ॥ टेक० ॥
जब अन्याय छाय गये चहुं दिश, धँरणि कँपानहारे।
सब लोगन के जी बिलखाने, असहयोग व्रत धारे।
वीर नेतान विचारे ॥ जेल ॥
त्रेता में रावण ने कीन्हों, घोर महा अविचारे।
रामचन्द्र ने लंक जाय के, राक्षस वंश संहारे।
बिभीषण साधु उबारे ॥ जेल ॥
हिरणकशिपु जब सब मुनियन पर, निर्दयता करि डारे।
दास प्रह्लाद उवारन आये, कपटि दनुज सब मारे।
मुनिन दुःख मेटउ सारे ॥ जेल ॥
वाहि बिपत की घोर घटा प्रभु !, भारत वर्षहि घेरे।
नेता मुनिगण काराग्रह में, ताकत आस तुम्हारे।
तुमहि "शैलेन्द्र" सहारे ॥ जेल ॥

जेल महात्म्य

[कव्वाली २६]

तुमको कारागार से हरगिज़ न ठहरना चाहिये।
देश सेवा के लिये कष्टों को सहना चाहिये॥
मातृ भूमी उदर में हम जन्म से पाले गये।
ऋण ये माता का अवश्य हमको चुकाना चाहिये॥
कृष्ण जी का जन्म मन्दिर प्यारा कारागार है।
तीर्थ का स्थान है खुश होके जाना चाहिये॥
सूखी रोटी बे निमक उत्तम महा प्रसाद है।
प्रेम से प्रणाम करके उसको पाना चाहिये॥
है विछावन ओढ़ना कम्बल फ़कीरी का वहां।
गर मिले वह भी नहीं धरती पै सोना चाहिये॥
जेल में रचना किया गीता तिलक भगवान ने।
ज्ञानका भंडार है उसको समझना चाहिये॥
बड़े बड़े सब देशनेता कैसे हैं नाज़ुक अमीर।
जेल दुःख को सह रहे यह सोच लेना चाहिये॥
जेल में गान्धी न जाते मान यह पाते नही।
हमको भी चल करके इज्ज़त वहाँ बढ़ाना चाहिये॥
अफ्रिका को सूल हरली जेल सुख की मूल है।
खुश होके जाना चाहिये तिलभर न डरना चाहिये॥
सोचो प्यारे भ्रातृ गण अब जीव हिन्सा है नहीं।
आत्मबल की शक्ति से अब काम लेना चाहिये॥
"शैलेन्द्र" की सब भाइयों से है बिनय हर बार ये।
निज स्वार्थ को अब त्याग कर परमार्थ करना चाहिये॥

जाने दो

[२७]

भाई विदा करो जाने दो।
तपस्वियो की तपो भूमि के, दर्शन कर आने दो।
जहां कृष्ण ने जन्म लिया था, मान कंस का चूर्ण किया था।
वहीं भेज, दासत्वपाश, जननी के कटवाने दो॥
जहां तिलक भगवान रहे थे, करते गीता गान रहे थे।
उसी पुण्य भू में तसलों पर, राष्ट्रगान गाने दो॥
गान्धो, मोती, लाज, जहां हैं, अली, दास, आज़ाद जहां हैं।
सनद राष्ट्रसेवा की उस, विद्यालय से पाने दो।
अत्याचार नष्ट करने को, दर्प दम्भियों का हरने को।
कर्मबीर सम कर्मक्षेत्र में, आज उतर जाने दो॥
पारतंत्र्य मां का हरने को, मणिमय मुकुट शोस धरने को।
कुछ बलिदान "सोमका" भी, वेदी पर चढ़ जाने दो॥

धूम मच्यो है

[होली २८]

भारत में आज धूम मच्यो है॥ टेक॥
वृटिश सिन्धु के पाप भंवर में, नैय्या डूबि रह्यो है।
तिलक डोर बल गहि खीच्यो, अब चहुं दिश शोर भयो है।
सबन अब चेति गयो है॥ भारत॥
जेल भरे सब कैदीगण से हा! हा!! कार मच्यो है।
निर्दोषिन को खून करन को, आज बिचार कियो है।
महा अन्याय भयो है॥ भारत॥

अमृतसर के बाग जलियां में, रक्तन रंग दियो है।
छोट बड़न को मारि पछारो, तरस न तनिक गह्यो है॥
घोर उत्पात कियो है॥ भारत॥
दीन "सोमदत्त" पद्य बनायो, बक्सर जबहिं रह्यो है।
एक बर्ष कीं अबधि पाय के, मित्रन मौज कियो है।
यहा मन मोद भयो है॥ भारत॥

जेल महिमा

[कहरबा २६]

हमारा प्यारा कारागार॥ टेक॥
तुझसे हमने सब सुख पाया, खाया, पीया धूम मचाया।
शान्ति का मंत्र तुझी से पाया, तू सुखमा आगार॥ हमारा॥
देश भक्तों की तीरथ भूमि; बिन दर्शन देश रक्षा न होगी।
गान्धी, तिलक, आजाद मौहम्मद शौकतअली बिहार॥हमारा॥
क्या गुण गाऊं शेष नहीं हो, भूल नहीं सकता मैं तुझको।
पुण्यथली तू धन्य लिया जहां कृष्णचन्द्र अवतार॥ हमारा॥
खान पान की असुबिधायें, रहन, सहन की वे बाधायें।
ईश ध्यान का पाय सुअवसर, भूला सब व्यापार॥ हमारा॥
नेताओं का आश्रयदाता, दर्शन तेरा है मन भाता।
गावे सोमदत्त तव गुणगाथा, कर मेरा उद्धार॥ हमारा॥

जेल दिग्दर्शन

[ग़ज़ल ३०]

स्वराज्य पाने की हो तमन्ना तो जेल वक्सर में जाना होगा।
अजीब कुलफ़त का झेलना है वो बार ग़म का उठाना होगा॥

नीम कुरता वो नीम जामा अरु सर पै टोपी हैवाना होगा।
मिलेगा कम्बल का काला कुरता गले में तख़्ती निशाना होगा॥
है सेल उस जेल ही के अन्दर उसी में देगा ढकेल जेलर।
उसी में चक्की बनी है पक्की उसी में टट्टी पैखाना होगा॥
है कुन्ड लबरेज वहां जल से हरदम वो आहिनी दे तवा के दो दो।
सुबह को खिचड़ी वो शाम रोटी दाल चावल का खाना होगा॥
जो काम में कुछ करोगे गड़बड़ तो आके जेलर करैगा खड़ बड़।
तब हतकड़ी और बेड़ियां दे तले में गुमटी के जाना होगा॥
निश्शब्द डिगरी में बन्द करके लगा के हुड़का भरदे ताला।
दे तीन कम्बल ओढ़ने को उन्हीं को चाहे बिछाना होगा॥
अगर जरूरत हो नाग हानी तो तार घन्टी को खट खटाओ।
घन्टीकी शब्द ध्वनि सुनि तभी तो "सोमदत्त" का आना होगा॥

भारतीय जेलों के गुप्त रहस्य अर्थात मेरा एक वर्ष का काराग्रही अनुभव

[लेखकः–साहित्याचार्य्य श्री पं० सोमदत्त जी शर्मा महोपदेशक ३१]

१–भूमिकाः—

जेलों की बातों को सुनाता पाठको मैं आपको।
पढ़कर इसे अब जान जावें जेलों के सन्तापों को ॥
किस भांति के हैं दुःख उठाये देश भक्तों ने वहां।
था जन्म पाया कृष्णचन्द्र पुनीति पावन ने जहां ॥

२ दो शब्दः—

अब जेलों की वह पूर्वता नहिं नामको भी रह गई ॥
जब तान साधु समाज के कानों में जाने लग गई ॥
वह दिन गए जब नाम सुनकर लोग डरसे कांपते।
सानन्द अब जातें वहां अहोभाग्य अपना मानते ॥

३–जामा तालाशीः—

है नियम यह होगी नहीं बेइज्जती कोई कभी।
हो नीच या हो उच्च कैदी चोर हो या साधु भी ॥
पर जामा तलाशी देखिये होती है किस ढब से वहां।
उठ बैठ करना अरु दिखाना गुप्त अंगों को वहां ॥

४-नया गोलः—

जब घुसगये हैं जेल में सिखलाइये सब ढंग तब।
रहना, व खाना बैठना, सोना व करना काम सब॥
पर हा! वहां घुसते ही सबके सरपै चक्की डालदी।
अन जान वे चूके कभी तो पेटियों की मारदो॥

५—कैदियों का वासालयः—

टट्टी पखाने हैं सभी उन वासों के भीतर बने।
जाड़ों में सूखें प्राण उनके और पावें दुःख घने॥
मच्छर व खटमल उनके रक्तों को सदा हैं खींचते।
इस हेतु वे तप्ताश्रु से मुख देश अपना सींचते॥

६—जेल में छोकरा किताः—

है अलग कारागार बच्चों के लिए हर प्रान्त में।
उनकी सुशिक्षा, खान, पान के नियम वैसे ही बने॥
पर आज बहुतेरे बिचारे चक्कियां ही चला रहे।
जाते हैं कोल्हू में ढकेले दर्शकों को रुला रहे॥
था ध्यान कि इन जेलों में उनका चलन बन जायगा।
थे चोर वहां डांकू बने यह मर्ज बढ़ता जायगा॥

७—जेलों में रन्डी किताः—

"रन्डी किता" है नाम कैसा बुरा अरु अपमान का।
हो नीच यद्यपि उचित ध्यान रखना उसके मान का॥
हैं वर्तमान समय में जितनी देबियां जाती वहां।
पर हाय! उनका भी यही उपनाम पड़ता है वहाँ॥

८—कैदियों की पोशाकः—

पोशाक होनी चाहिए सब सभ्यता अनुकूल ही।
होवे तथा नहिं वायु जलके वह कभी प्रतिकूल भी॥

पर अधफटा कुरता खुला जँघिया मिलैगा आपको।
अब तोड़िये कण्ठी गले में तौक़ होगा आपको॥
यूरोपियन होते अगर तो फेर वह दुसरी बात थी।
खाने पहिरने के लिये अनुकूलता सब भांति थी॥

९—कैदियों का भोजनः—

भोजन का रोना व्यर्थ है वह सुधर ही सक्ता नहीं।
नियम पुस्तक में रहें पर काम में लगता नहीं॥
चांवल बिधाता के संभारे दाल भी बिगड़ी हुई।
तरकारियों की कौन पूछे घास पात मिली हुई॥

१०—कैदियों के पानी का प्रबन्धः—

नहिं पाइप के जल की पहुंच जिस वार्ड में दुर्भाग्य से।
पानी भरावें मैहतरों से और डोम दुसाध से॥
आचारियों के आचरण पर हाय! बट्टा लग गया।
जनु धर्म उनके देह को अस्पृश्य कह कर तज गया॥

११—कैदियों का दिन चर्य्याः—

अब कैदियों के दिवस चर्य्या का करूं वर्णन यहां।
नियमित अनियमित कौन देखै है अँधा धुन्धी वहां॥

१२—कैदियों के कामः—

कौन है किस काम के है योग्य यह देखें नहीं।
है क्षीण दुर्व्वल या कि रोगी ध्यान में लेते नहीं॥
कोल्हू चलाना, कूटना चावल या चक्की पास हो।
हो असहयोगी कोई तो दैव ही की आस हो॥

१३—कैदियों की पेशीः—

है नियम यदि कोई बिगाड़े काम कोई जान कर।
तो पेश करना अफसरों के पास दोषी मान कर॥

पर जमादारों सिपाई से अगर हो कुछ कसर।
तो पीटते ले जायं दिलवायें सजायें बे ख़तर॥
दिनरात ऐसी बातें होती हैं कोई पूछे नहीं।
कैदी की नालिश को तो सुनना वे कभी सीखे नहीं॥

१४—कैदियों की सजाः—

अब सजाओं की सुनाता हूं कहानी आप को।
है ध्यान हो जावे नहि कुछ कष्ट मनमें आपको॥

१५—खड़ी हथकड़ीः—

हथकड़ी होती खड़ी जिसको किसी कारण वहां।
इस भांति नौ घण्टे बितावे हाथ जोड़े वह वहां॥
नहि बैठ सक्ता वह कभी यह नियम के प्रतिकूल है।
चुपचाप रहना ही खड़ा यह नियम के अनुकूल है॥

१६—उल्टी हथकड़ीः—

होती सज़ा जब हथकड़ी उल्टी किसी को मित्रवर।
तो नियमित अनियमित कौन देखे सुनो हे पाठक प्रबर॥
है नियम यद्यपि मात्र छैः घण्टे ही दैनी यह सज़ा।
पर दिन समस्त है बीतता साहेब कहें सो है बजा॥
हाथों को पीछे बांध कर फिर हथकड़ी पहना दिये।
होवे जरूरत नागहानी वह मुये अथवा जिये॥

१७—रात में लेटी हथकड़ी—

रातों की लेटी हथकड़ी है पाशविक व्यौहार ये।
है मानुषिक जीवन पै अत्याचार औ अविचार ये॥
इन नारकीय नियमों का उठजाना है श्रेयस्कर सदा।
है दण्ड देना मानुषिक इन्सान को बेहतर सदा॥

१८—डन्डा बेड़ी:—

डन्डों की बेड़ी हैं बनी उन कैदियों के दमन को।
दो हैं जुड़े इकसंग में उनके सकल सुख हरण को॥

१९—सिकली बेड़ी:—

झन्कार सिकली बेड़ियों की है सुहावन लग रही।
चलते व फिरते बैठते उनके हृदय में जग रही॥
पर हाय! क्या उन बन्दियों को सुक्ख देती होयगी।
लोहे की गरिमा उनके धीरज छीन लेती होयगी॥

२०—छानबेड़ी:—

है बेड़ियों में छान बेड़ी सब से बढ़ कर दुःख कर।
है एक डण्डा बीच में लम्बाई जिस की फूट भर॥
कम वेश कोई कर न सक्ता उसके रहते पैर को।
इस भांति रख सक्ते नहीं निज शक्ति में निज पैर को॥

२१—लोही:—

नियम है लोही कभी दी जायगी जिसदिन जिसे।
नहीं काम करना होयगा उस दिवस कुछ भी उसे॥
पर वहाँ तीन चार दिन तक लोही ही देते गये।
फिर मारपीट करें उसे अरु काम भी लेते गये॥

२२—चट्टी:—

देते हैं चट्टी वस्त्र टाटों के बनाये ही हुये।
मरकट की नाँई घूमते मानो बझाये ही हुये॥
वह देखने में नर भले हों पर कौन उनको मानता।
पशुवत सदा व्यवहार कर पशु ही उन्हे है जानता॥

२३—बेंत:—

हे! लेखनी! तू कांपती क्यों है यहां इस ठाम पर।
नहि तू अभी घबरा भला इस बेंत ही के नामपर॥

वे धन्य हैं बन्दी जिन्हें यह बेंत देबी चिपकती।
दर्शक तो रोते हैं खड़े पर यह कभी नहीं बिचलती॥
साहब की आज्ञा पाय के मैंहतर ने बेंत उठा लिया।
"सरकार सलाम" कहा और एक आघात जमा दिया॥
इस बेंत की गिनती नहीं होगी सजा के साथ में।
हाय दैव! तुमने न्याय की दी बाग किसके होथ में॥
एक से ले तीस तक यह एक नर पर आ पड़े।
अधिकारी गण के ध्यान में जिसदम कभी वे जा पड़े॥
वहाँ मारने वाले को लखि यम दूत पड़ते याद हैं।
बन्दी विचारे चीखते करते खड़े फ़रियाद हैं

२४—कालीकोठरी सेलः—

है जेल अन्दर सेल काली कोठरी कहते जिसे।
अद्भुत दशा उस नर्क की वहां कौन पूछे है किसे॥
हैं चार ताले दर्मिया हतभाग्य रहते बन्द वे।
उनका लरजना, उस तड़पना अधिकारिगण नहि देखते॥
घण्टी बनी है सूचना आर्डर को देने के लिये।
पर कौन जाता है वहां पर कष्ट करने के लिये॥
पानी बिना वे छटपटायें या जरूरत हो कोई।
वे बन्द उसमें ही रहें नहि ध्यान में लावे कोई॥

२५—जालः—

हैं जाल वाले बार्ड नरकों के नमूने बन रहे।
मानो वहां के बन्दिगण यम यंत्रणा में सन रहे॥
एक ही घर में अनेकों खड़े बने हैं जाल से।
पेशाब, पैखाना करें बतलाइये किस हाल से॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 808
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

२६—जेल का असपतालः—

अब अस्पतालों की जरा कुछ दुरदशा सुन लीजिये ।
उन डाक्टरों की बुद्धि अरु असतर्कता सुन लीजिये ॥
गर झन झनी का रोग हो जावे किसी के पैर में ।
पहनाइये बेड़ी तुरत कुछ दिवस उसके पैर में ॥
सिर दर्द, खांसी, प्लीह अथवा ज्वर किसी को होगया ।
क्वीनाइन उसको पिलादिया बस रोग सारा खोगया ॥
क्या है व्यवस्था अजब उठ बैठे कोई रोगी यदी ।
तो होगया अच्छा निकालो काम पर जावे अभी ॥
इसका ही फल यह हो रहा नित्य मृत्यु संख्या बढ़ रहीं ।
कुछ मर रहें हैं बिन व्यवस्था कुछ की सांसे चढ़ रहीं ॥

२७—जेल के बगीचेः—

तरकारियों के लिए जेलों में बने हैं बाग भी ।
अरु उपज भी होती बहुत सब भांति सब्जी साग भी ॥
पर अफसरों के खाद्य को ही ये हुए पैदा सभी ।
हतभाग्य ! कैदी रट मरें नहीं ग्रास में आता कभी ॥

२८—जेल के कारखानेः—

हैं कारखाने जेल में व्यापारियाना ढंग के ।
मानो वहां की आय के हैं द्वार दुसरे रंग के ॥
सब चीज बनतीं अल्प व्यय में बन्दिगण द्वारा वहां
पर कैई गुणा धन लाभ होता उनके ही द्वारा वहां ॥

२९—जेल पुस्तकालयः—

पुस्तकालय की दशा जेलों की सुनते जाइये ।
हैं प्रथम पुस्तक ही वहां अब खूब पढ़ते जाइये ॥
हैं नाम को ही तालिका में दर्ज बीसों नाम ही ।
पर मांगने पर कह दिया इस समय यह पुस्तक नहीं ॥

३०—जेल में बेगार तथा रिश्वत खोरीः—

बेगार रिश्वत का वहाँ कुछ दूसरा ढाँचा बना।
माना कि कारागार दुनियां का अलग सांचा बना॥
अधिकारीगण कैदी से लेते काम निज कैसे वहां?
दुर्गन्ध मय वह खाद्य चीजें किस तरह जाती वहां?
दुर्बल पशु के छीछड़े हो मान्स हो स्वीकार क्यों?
नहिं उन्नति कैदी की देखें वे बड़े जमादार क्यों?
कारण सभी का एक ही रिश्वत है इसका जानिये।
पर ढंग बीसों हैं वहां पर सत्य इसको मानिये॥

३१—जेल में मादक वस्तु तथा जुगाड़ः—

है नियम साधारण निवारण वस्तु मादक की सभी।
पर कैदियों को घट नहीं सक्ता तमाकू भी कभी॥
जेलों की चीजें बेचकर अपना जुगाड़ बना लिया।
दो की जगह वहाँ चार देकर निज दलाल बनालिया॥

३२—कैदियों की छुट्टीः—

छुट्टी का दिन सप्ताह में इक दिवस तो रविवार है।
फिर सालभर में कैई दिवस छुट्टी ज़बहि त्योहार है॥
पर छुट्टियों में कैदियों के नाक में दम आ रहे।
लेते अनेकों काम उनसे इस तरह हैं सता रहें॥

३३—कैदियों की तौलः—

सप्ताह में हो एक दिन उन कैदियों को तौल भी।
पर हा! भला अब वे रहें इस भांति से वे तौल ही॥
है नियम घट जावै कोई निज तौल में जब ही कभी।
तो काम करदो बन्द अरु दो ख़ास फिर भोजन तभी॥
पर घटै कितना भला ही कोई कैदी क्यों नहीं?
नहिं पूंछता कोई वहां चर्चा कभी भी हो नहीं॥

३४—कैदियों का फ़ाइलः—

सप्ताह में है फाइल का इक दिन वहाँ निश्चित बना।
जिस दिवस कैदी का कहना उचित हो जावे सुना॥
पर जंगली ढंगों से उनको खड़ा करवाना जरूर।
दातों को ही देखना यह काम है जो कुछ जरूर॥
उनकी शिक़ायत कौन सुनता दैव ही की आस है।
यदि चूक कुछ भी हो सलामी में तो देते त्रास हैं॥

३५—कैदियों की चिट्ठी मुलाक़ात के नियमः—

चिट्ठी मुलाकात महीने तीन में एक वार हों।
पर वह भी अफसर की खुशी पर है कि वेड़ा पार हो॥
उस ब्रह्म मुख से जो निकलता वेद वाक्य कहो उसे।
वे जो करें सब ठीक तुम शिर नवा सहो उसे॥
हैं कैदियों की चिट्ठियां रहती इकट्ठी सब वहां।
फिंकतीं है रद्दी टोकरी में ध्यान में आईं जहां॥

३६—कैदियों को मार्काः—

साल में एक मास कमती हो सजा में जान लो।
पर अधिक भी मिलती रियायत है किसी को मानलो॥

३७—कैदियों में फूट नीतिः—

हैं लाल बिल्ला, मैट, पहरेदार उनमें बना दिए।
निज फूट नीति चक्र को जेलों तक में चला दिए॥
एक बन्दि द्वारा दूसरे बन्दी का कराते दमन हैं।
लोभ ही उनका शुभाशुभ ज्ञान करता हरण है॥

३८—आजन्म दण्डित कैदीः—

आजन्म कारागार वासी बन्दि गण रोते पड़े।
मानो नियम उनके लिये उल्टे बनाये हैं गए॥
नहिं काम लेना चाहिये आधी सजा जब शेष हो।
कोई नहीं है देखता नहीं न्याय का लवलेश हो॥

३९—कैदियों के साथ वार्डरों का व्यवहारः—

उन कैदियों की सुव्यवस्था वार्डरों का फर्ज़ है।
पर ध्यान में लाते ही उनके तन में होता मर्ज है॥
कुछ बात करनी भी पड़े कैदी किसी से जब कहीं।
प्रारम्भ गाली से करें कुछ शर्म खाते वे नहीं॥

४०—जेल में पाखाना जलाने का भट्टीः—

प्राचीन युग में हवन गन्ध सुगन्ध होते लाभकर।
पर जेलों में विस्टा जलाना भी बना है स्वास्थ कर॥

४१—जेल में पगली घन्टीः—

घन्टियां पगली बजाते बेनियम ही जब कभी।
तैयार हो जाते सिपाई एक दम ही में सभी॥
हैं चोट बन्दूकों की करते जिससे बन्दीगण डरें।
भय खाय कर ही चुप रहें जनु प्राण रहते ही मरें॥

४२—जेल निरीक्षकः—

हैं नाम को चुने निरीक्षक काम कुछ करते नहीं।
वे अफसरों की बात ढोएं धर्म से डरते नहीं॥
यदि कोई साहस करके अपनी राय कुछ जाहिर करें।
तो साहेब बहादुर नाम उनका तुरत ही खारिज करें॥
इससे बने कठ पूतले अधिकारीगण के हाथ में।
यदि चाहते निज नाम तो हों हां हजूरी साथ में॥

४३—जेल में गान्धी टोपियों की लूटः—

हैं क़ौमियत के चिन्ह गान्धी टोपियां मेरी अभी।
पर हाय! जेलों में गईं लूटी हमारी वे सभी॥
हैं जिस तरह भूतों पिशाचों प्लेग से नर डर रहे।
टोपी हमारी देखि अफसर कांपते घर घर रहे॥

बिविध विषय के राष्ट्रीय गान

गान्धी गौरव

शाहन्शाह गान्धी ।

[ग़ज़ल ३२]

मुल्क दिल का है शहन्शाह हमारा गान्धी,
माल से जान सिवा, जान से प्यारा गान्धी ।
स्वर्ग में जब से सिधारे हैं महाराज तिलक,
मादरे हिन्द का है एक सहारा गान्धी ।
लोग समझेंगे कि, है ईश्वरी संकेत यही,
क़ौम को आज जो कर देगा इशारा गान्धी ।
इसको एजाज़ कहें उनका या अक़बाल कहें—
जय हुई उसकी यहाँ जिसने पुकारा गान्धी ।
मुल्क पहिने रहे जंज़ीरे गुलामी अब भी,
कर नहीं सकते हैं हर्गिज़ ये गवारा गान्धी ।
खून नाहक़ का है दामन में लगा जिसके दाग़,
उस हुकूमत से करें क्यों न कनारा गान्धी ।
भाग भारत के जगे, मुल्क है बेदार हुआ,
बन के चमके हैं जो किस्मत के सितारा गान्धी ।
आग लग जाय ज़माने में, जलें झूठ के बन,
सत्य का छोड़ दें गर एक शहारा गान्धी ।
मुल्क आज़ाद न हो जायगा जब तक कि "त्रिशूल"
देंगे घटने न कभी जोश का पारा गान्धी ।

[चैता ३३]

धन्य तव करनी, अति अनुपम सुख करनी हो रामा ॥टेक॥
धन, धन धन्य गान्धी, धन्य तव संग साथी।
धन्य तव प्रसरणी जननी हो रामा ॥ धन्य ॥
बास करो गुजरात प्रान्त में।
सकल जगत मन हरनी हो रामा ॥ धन्य ॥
बन्धु अली अरु लज्पत, नेहरू।
भारत सागर तरनी हो रामा ॥ धन्य ॥
नीति तुम्हारी शान्ति सर्वप्रिय।
सुनि सुनि कांपत शत्रु हो रामा ॥ धन्य ॥
त्यागि मोह "शैलेन्द्र" उठहु अब।
बिलखत भारत जननी हो रामा ॥ धन्य ॥

बिहाग [गान्धी महिमा ३४]

हमारे प्यारे की महिमा अपार ॥ टेक ॥
शान्तिमयी निर्वैर नीति नेहि, भारत तारण हारण हार ॥हमारे॥
जेल गए निज देश के सुखहित, त्यागेऊ ऐश विहार ॥हमारे॥
धारि सुव्रत अब असहयोग का सारे जग उजियार ॥हमारे॥
जागि गयो है देश पूर्ण अब, ग्रहण कियो सुविचार ॥हमारे॥
बन्धु अली, हक दास राजेन्द्र की, बोलहु जय हरबार ॥हमारे॥
कहत "शैलेन्द्र" मोह मद त्यागहु, ध्याबहु मातृपुकार ॥हमारे॥

अपना ही क़ासाना रहे

[कव्वाली ३५]

अपने गुलशन में फ़क़त अपना ही क़ासाना रहे।
गैर की शरकत से बेहतर है कि वीराना रहे॥

बन्द क्यूं साकी मये क़ौमो का मय ख़ाना रहे ।
खोल दे कन्टर का मुँह गर्दिश में पैमाना रहे ॥
ताकि हों सरसार पीकर हम मुवे हुव्वे वतन ।
और फिर मस्ती में अमृतसर का अफ़साना रहे ॥
है मुवारिक वह ज़मी जिस जाँ हुये लाखों शहीद ।
या इलाही क़ौम का कायम ये बुतख़ाना रहे ॥
ले गये आख़िर पकड़ कर लीडरों को इसलिये ।
की फ़िदाये क़ौम का दिल गम में दीवाना रहे ॥
पर नहीं हमने नई सीखी हैं तर्जे वफ़ा ।
दुश्मनों से दोस्ती ग़ैरों से याराना रहे ॥
हम फ़कीरों को नहीं कुछ चाहिये इसके सिवा ।
तन पै खद्दर हाथ में जञ्जीर शाहाना रहे ॥

आज़ादी का आगाज है

[कव्वाली ३६]

जगे आज़ादी का हिन्दोस्तान में आग़ाज़ है ।
काट दो बेड़ी गुलामी की यही आवाज़ है ॥
है कोई सीना सिपर सर है किसी के हाथ पर ।
इस वतन की फ़ौज का हर नौजवाँ जाँबाज है ॥
है सिपह सालार इस लश्कर के मिस्टर गान्धी ।
जिनकी हर एक बात में जादू है और एेज़ाज है ॥
हम देंगे जादू के जोर वातिल को अभी ।
ज़ोरे रुहानी हमारे पास बे अन्दाज़ है ॥
दिल जलों के आह आगे भला किस काम की ।
वह आदू की तीर जिस पर उसको इतना नाज़ है ॥

इस ज़मी पर ख़ाक, भी उनकी नहीं होगी कभी ।
आसमां पर जिन जहाजों कोनभव पर वाज़ है ॥
हाथ तो उठने न पाये पर क़दम उठते चले ।
इस मुकद्दस जंग में फ़तह का यह राज़ है ॥
आह की ज़ञ्ज़ीर से घटता नहीं अपना विकार ।
वह वतन के खादिमों को वा इसे ऐजाज़ ॥
मुज़तरिक डरियों न तू जंजीर की झँकार से ।
क़ैद में तेरे तराने के लिये यह शान है ॥

स्वाधीनता

[ग़ज़ल ३७]

स्वाधीनता से सुखदतर क्या वस्तु है विश्व में ।
जीना न जीना तुल्य है पर भृत्य को इस विश्व में ॥
कोई कहीं है चाहता परतंत्र जीवन भी भला ।
चाहे पहिनना कौन जो है दासता की शृँखला ॥
स्वाधीनता के हरण का साहस करे कोई बली ।
क्या मृत्यु उसके शीशपर है नृत्य करने को चली ॥
दुश कंटकों से पूर्ण वृक्षों के शिखर पर वास हो ।
खाने पड़े पत्ते परन्तु न दासता का त्रास हो ॥
उद्धार जब हो देश का क्या क्लेश कारागार से ।
भय भीत मैं हूंगा नहीं कभी जेल अरु तलवार से ॥
बेड़ियों की झन्कारों में शुभ गीत गाता जाऊंगा ।
तलवार के आघात से निज जय मनाता जाऊंगा ॥
रहते हुए तनु प्राण रण से मुख न मोड़ूँगा कभी ।
कर शक्ति है जबलों न अपने शस्त्र छोड़ूंगा कभी ॥

स्वाधीन पूर्व गण रुधिर जब तक रहै मम देह में ।
तब तक सहूंगा अब न अत्याचार बैठा गेह में ॥

* स्वराज्य लेंगे *

[गज़ल ३८]

कठिन है मंजिल ठहर न रहबर उदू है शमशीर खम निकाले ।
तुझे वे साबित है कर दिखाना कदम न मोड़ेंगे खूं बहाले ॥
खड़ी हैं हथियार बंद फौजे लगे हैं तोपों के शिस्त तुझपर ।
बिछे हैं कांटे वो आज बनकर खुशामदी जर कमाने वाले ॥
न धमकियों से न गोलियों से मगर ये रफ्तार में कमी हो ।
बहादे जालिम नहीं हैं परवाह हमारे खूं के नदी वो नाले ॥
शुरूर आंखो में हो खिलाफत का दिल पै पंजाब की मुहर हो ।
हो तर्क ताल्लुक की तेग बरफिर बढ़े चलो शेरदिल सँभाले ॥
नहीं खबर दार लब हिलाना न दिल दुखाना न खूं बहाना ।
मिटाना चाहें मिटायें हमको खुदाई खलकत मिटाने वाले ॥
रजील रौलट ने दिल दुखाया ज़लील डायर ने खूं बहाया ।
हों और अरमान जिसके दिल में तोसर है हाज़िर उसे कटाले ॥
बस अब तो इस परही फैसला है स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ।
न चैन माधो को होगी तब तक न हम हैं खामोश रहने वाले ॥

टलैगे स्वराज्य ले के अब तो,
यह नक्श दिल पै जमा चुके हैं।

[कव्वाली ३९]

न होंगे पस्पा किसी तरह से क़दम जो आगे बढ़ा चुके हैं,
ख़िलाफ़ शिद्दत पै मुस्तक़िल हैं, हम अपनी हस्ती मिटा चुके हैं।

रमायेंगे अब इसी की धूनी विदेशी अशिया जला चुके हैं,
नहीं है तोशक की कुछ ज़रूरत, ज़मीं पै विस्तर लगा चुके।

लगी है दिल में इसीकी चेटक, ज़ुबाँ से जो कुछ सुना चुके हैं,
टलेंगे स्वराज्य लेके अब ता, यह नक्श दिल पै जमा चुके हैं।

जफ़ा से दम भर कभी न चूके, तरह तरह से दिला चुके हैं,
सितम के घटा उतरे सर हज़ारों लहू के दरिया बहा चुके हैं।

कहाँ की बन्दूक़ कैसे खंजर, मशीनगन तक चला चुके हैं,
लिये थे हाथों पै सर निहत्थे, गले खुशी से कटा चुके हैं।

कसर जफ़ाओं में कौन छोड़ी वह सारे करतब दिखा चुके हैं,
टलेंगे स्वराज्य लेके अब ता यह नक्श दिल पै जमा चुके हैं।

बढ़ेंगे क्या पैंग आशिक़ी के रश्म उल्फ़त घटा चुके हैं,
फ़रेब, मकरो दग़ा से हमको वह ख़ूब झूला भुला चुके हैं।

वही नज़र ख़श्मगीं हैं अब तक अगर्चे बर्सों सता चुके हैं,
नहीं है क़ाबू में दिल हमारा हम अपने दिल को हटा चुके हैं।

न होंगे पीरे फलक के साथी क़सम जवानी की खा चुके हैं,
टलेंगे स्वराज्य लेके अब ता, यह नक्श दिल पै जमा चुके हैं।

तुझी पै इन्साफ़ है यह गरदूं कि कैसी उल्फ़त निभा चुके हैं,
तेरे पसीना पै बे-मुरव्वत लहू हम अपना गिरा चुके हैं।

तमाम मालो सताय देकर हम अपना घर तक मिटा चुके हैं,
हम अपने ग़ल्ला से ऐ सितमगर, हज़ारों जानें बचा चुके हैं।

हमेशा वादों पै अपने 'नश्तर' वह हमको जन्ना बता चुके हैं,
टलेंगे स्वराज्य लेके अब तो यह नक्श दिल पै जमा चुके हैं।

(फ़तह से)

पते की बात

[ग़ज़ल ४०]

खुदा में अगर कुछ खुदाई न होती।
ख़िलाफ़त तरक्की भी पाई न होती॥
तिलक गान्धी जी कुछ न कर सक्ते उनका॥
जो गोरों के दिल में बुराई न होती॥
न शौकत मोहम्मद अली जेल जाते।
कुरुआ़ की इजाजत जो पाई न होती॥
जहां गान्धी जी की न जै जै मनाता।
अगर दिल में उउके सफाई न होती॥
जो मक्के मदीने पै गोला न गिरता।
निशाचर पै आफ़त भी आई न होती॥
"न" शैलेन्द्र हर्गिज़ असहयोग करता।
अगर जेल से लौ लगाई न होती॥

[शेर ४१]

बुझाने से भड़क जातो है कब यह आग बुझती है।
लगे जिस दिल में वह जल जाय तब यह आग बुझती है।
इधर आ तू ज़ालिम तुझे आज़माऊं
तू तीर आज़माये मैं दिल आज़माऊं
वो ज्यों ज्यों राह में कांटे बिछाते जाते हैं मेरे
खुदा का शुक्र है त्यों त्यों ये तेज़ रफ़्तार होती है

पूज्य गान्धी जी का सन्देसा।

[ग़ज़ल ४२]

सन्देसा पूज्य गान्धी का सभी को सुना देंगे।
अगर है देश सोया तो उसे अब हम जगा देंगे॥
तजे निद्रा उठे भारत खड़ा हो न्याय पै डटके।
जुल्म अन्याइयों के अब यहा से हम हटा देंगे॥
बहाया खून जलियां में हमारे बाल बूढ़ों का।
स्त्रियों की इज्जतें ली हैं मजा उसका चखादेंगे॥
तजेंगे मोह कौन्सिल का न लेंगे पद गुलामी के।
सुसेवा मातृभू की कर उस उन्नत बना देंगे॥
तजो स्कूल तथा कालिज हटादो अब वकालत को।
स्वदेशी बस्त्र बाबू का सबक सबको पढ़ा देंगे॥
अदालत में न जाओं तुम करो पंचायत जारी
मिटे अन्याय जल्दी से प्रथा ऐसी चला देंगे॥
न बन्दूक का डर है न तोपों को धड़ाधड़ का।
आत्मिक बल का खरा डंका जगत में हम बजा देंगे॥
लड़ाई से न कुछ मतलब न शस्त्रों की जरूरत।
भभकती आगको अब हम सुधारस से बुझादेंगे॥
कृष्ण, बुद्ध, वीर राघव, का तथा ईसा मुहम्मद का।
तिलक, लाला महात्मा का सन्देशा हम सुनादेंगे।
दयामय गोदमें अपनी उठालो बीर भारत को।
शान्ती रस प्रेम का प्याला प्रभु सबको पिलादेंगे॥
बीरो उनकासन्देसा यह करो जी जानसे पालन।
अहिन्सा न्याय से निर्भय स्वराज्य अपना जमालेंगे॥

नहीं करते

[ग़ज़ल ४३]

जो मर्द हैं आज़ार की परवा नहीं करते।
मक़तल में दमे मर्ग वो तड़फा नहीं करते॥
कट जाते हैं पिस जाते हैं होते हैं जिला वतनी।
जो मुल्क पर मरते हैं वो क्या २ नहीं करते॥
हो जायंगे बरबाद जो ये रक्खेंगे बर्ताव।
हुक्काम कभी ज़ुल्म से फूला नहीं करते॥
वे जुर्म दी जाती हैं ये हमको सजायें।
फिर भी यह दावा है कि वेजा नहीं करते॥
रम जायंगे ये जान तेरे जोरो सितम में।
हम राम हैं आराम की परवाह नहीं करते॥

शुभ कामना

[ग़ज़ल ४४]

उरूज़े कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ताँ होगा।
रिहा सैय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा॥
चखायेंगे मज़ा बरबादिये गुलशन का गुलचीं को।
बहार आजायगी उसदम जब अपना बाग़बां होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से अय दर्दे वतन हरगिज़।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा॥
ये आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं अय ख़ंजरे कातिल।
बता कब फैसला तेरे हमारे दरमियां होगा॥
वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इमतहां होगा॥

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पै मरने वालों का यह वाको निशां होगा॥
कभी वह दिन भी आयेगा जब अपना राज्य देखेंगे।
जब अपनी ही जमी होगी और अपना आस्मां होगा॥

वंशी बजावेंगे

[ग़ज़ल कव्वाली ४५]

सुना है सामरे आज फिर वहीं वंशी बजावेंगे।
निराली चाल मतवाली से गोरों को रिझावेंगे॥
मुकट शिर धर कमर कछनो "तिलक" माथे लगाकरके।
"महेन्द्र" सुघर "अरबिन्दु" सा मुखड़ा दिखावेंगे॥
त्रिभंगी छवि अनोखी चरम्प और चोखी अदाओं से।
वही "गोपाल" मोहनचन्द" सा धरि रूप आवेंगे॥
करेंगे काम वीरोंका करेंगे कर्मवीर अब तो।
सभी पर "हरदयालु" हो दीन बन्धु कहावेंगे॥
रचैगो 'दास" वनमाली "विपिन" से सत्यही जाकर।
रखेंगे "लाज" भारत की सुरीले राग गावेंगे॥
जो रजखाया था यहां पहिले उसी का स्वाद करि सुमिरन।
अगत्या भूमि में बसफिर पुनर अवतार पावेंगे॥
विजय है "रुद्र" को अबतो रखो प्रण आज अय माधो।
ये हिन्दी हिन्द हिन्दू हित तुम्हें विन्ती सुनावेंगे॥

सदाक़त

[कव्वाली ४६]

सदाक़त का हरेक आलम में शोहरा हो ही जाता है।
जो सुनता और समझता है वह शैदा हो ही जाता है॥

न देखे बूमनाबोना तो सूरज की ख़ता क्या है।
मगर ज़ाहिर जहां में उसका जलवा हो ही जाता है॥
मुजिर है चोरके हक़ में शवेगर चांदनी तो क्या।
मगर वो चांद ख़लकत को तो सुखदा हो ही जाता है॥
निशाचर नीच मायाकी सचाई को छिपाते हैं।
मगर फिरभी तो उनका चाक हो हो जाता है॥
सचाई के बताने में जिन्होंने जान तक दे दीं।
जहां में उनके कामों का तो सोहरा हो ही जाता है॥
भलाई मुल्क़ के ख़ातिर जिन्होने सख़्तियां झेली।
बिलाशक उनका पबलिक पर तो कर्जा होही जाता है॥
नहीं है हिन्दुओ हाजत तुम्हें ग़म रंज खाने की।
कभी नादा जो होता है वह दाना हो ही जाता है॥

बीर बालक हक़ीक़त राय का और हाकिम पंजाब का सवाल जवाब

[ग़ज़ल ४७]

कहा यूँ हाकिमें लाहौर ने कमसिन हक़ीक़त से।
है तुझसे काफ़िरों को कत्ल का फ़तवा अदालत से॥
बदन थर्राता है और दिल धड़कता मौत के डर से।
हक़ीक़त तेरी है क्या है कांपते है शेर हैवत से॥
मुझे कुछ रहम आता है तेरी शक्लो शवाहत से।
तेरी ये क़ीमती जाँ बच सकेगी एक सूरत से॥
रसूलिल्लाह के क़दमों पै अब सर रख कर बनो मुसलिम।
तरीक़ा एक है तेरे ये बचने का हिलाक़त से॥

ज़ईफी पर रहम कर और न दे तकलीफ़ फ़ुर्कत की ।
तुझे पाला है माता और पिता ने नाज़्वो न्यामत से ॥
मुसलमा बनते ही हो जावोगे महकूम से हाकिम ।
करोगे हिन्दुओं पर हुक्म राज़ी फिर हकूमत से ॥
मिलेगा मालो ज़ेवर और होगी खाना आबादी ।
बस यूँ ज़िन्दगी होगी तुम्हारी ऐशो इशरत से ॥
ग़रज़ ऐशोतरब सब ज़िन्दगी में तुझको हासिल हों ।
महा जन्नत नसीब होगी हज़रत की सफ़ाअत से ॥

[जवाब ४८]

यह सुनते ही हक़ीक़त राय ने बाजोश फ़र्माया ।
हज़ार अफ़सोस खूब इन्साफ़ होता है अदालत से ॥
मुस्लमाँ बन के मैं जिन्दा रहूं हर्गिज़ नहीं मुम्किन ।
बदर्ज़ाहूब मर जाना है बेहतर ऐसी ज़िल्लत से ॥
पढ़ा हो जिसने गीता को उसे क्या मौतका ख़तरा ।
वह डरता है जो ना वाक़िफ रहा इसकी हक़ीक़त से ॥
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदन्त्यापो नच शोषयतिमारुतः
गला सक्ती नहीं पानी अमर है आत्मा मेरी ।
जला सकी नहीं है आग भी तो अपनी ताक़त से ॥
जमी भी छोड़ दे महेवर पै चलना आब भी बहना ।
हक़ीक़त फिर नहीं सक्ता कभी हर्गिज़ हक़ीक़त से ॥
यह तो मुम्किन है भूलें चाँद सूरज अपनी गर्दिश को ।
क़दम इक इंच हट सक्ता नहीं राहे सदाक़त से ॥
धर्म है ग़ैर फ़ानी मालोज़र दुनियाँ का फ़ानी है ।
बदल सक्ता नहीं इस धर्म को मैं मालो दौलत से ॥

धर्म पर हो गये कुर्बा गुरूगोबिन्द के बेटे ।
सबक़ मैंने ये सीखा है वज़ुर्गां की शहादत से ॥
खुशी है आज जीता हूं धर्म बीरों के क़दमों पर ।
बिला शक मौत के बदले मैं डरता हूं निदामत से ॥
अगर गल जाये इकदाना तो निकलें सैकड़ों दाने ।
छुया हर्गिज़ नहीं ये राज़ है अहले बिसारत से ॥
ये कह कर रखदिया ख़ञ्जर तले सरके हक़ीक़त ने ।
धर्म पै हो गया कुर्बां शादाने मुर्सरत से ॥

सत्याग्रह असहयोग प्राचीन है प्रहलाद का पिता से असहयोग

[ग़ज़ल ४६]

पिता अधिकार है तुमको हमें गिर से गिराने का ।
जलाषय में डुबाने और पावक में जलाने का ॥
तुम्हें अधिकार है राक्षस (राजन) करादो देश निष्कासन ।
तथा बन्दी बनाडालो हमें निज जेलखाने का ॥
हमें भी सोलहो आना दिया यह स्वत्व ईश्वर ने ।
प्रतिज्ञा पालने में शान्ती से सब दुःख उठाने का ॥
तुम्हें अधिकार है हमको दुःखद शूली दिलादीजे ।
हमें अधिकार है उससे न पीछे पग हटाने का ॥
अहो असुरेन्द्र इस भय से न तुम भय भीत करसक्ते ।
है आत्मिक बल भरा मुझमें सफलता मुख्य पाने का ॥
किया सत्य प्रण जो कुछ न जौ भर अब टलेंगे हम ।
कलंकित कालिमा अपने नहीं मुखपर लगाने का ॥

हुआ प्रहलाद था जिसने तजी थी डरसे असहकारिता।
कभी इतिहास में ऐसा नहीं हरगिज़ लिखाने का॥
यह विजयोद्दे श्य अपने को तिलांजली दूं नहीं हूं में।
तुम्हारी इन दुराज्ञाओं के नहीं सन्मुख सर झुकाने का॥
हमारा लक्ष ऊंचा है हमारा ध्येय निश्चल है।
सहायक है स्वयं भगवान जा रक्षक है ज़माने का॥
तुम्हारी यह दमन शैली अवश्य यक दिन दमन होगी।
समय भी है उपस्थित अब दमनकारी के आने का॥

समझ कर सत्याग्रह में नाम लिखाना होगा।

[ग़ज़ल ५०]

सत्य आग्रह में क्या क्या नियम निभाना होगा।
बिना हथियारों के रण क्षेत्र में जाना होगा॥
मोह माया न कभी पास फटकने पावे।
पूर्ण त्यागी का तुम्हें दृष्य दिखाना होगा॥
वस्त्र आभूषण का भी शौक़ न दिलमें करना।
अन्न बिन भूखे भी समय बिताना होगा॥
जेहल में भेजे वे गर तोप चलावें तुम पर।
उस समय तुमको पग पीछे न हटाना होगा॥
तोप तलवारों का उस ओर ज़खीरा होगा।
ज़ुल्म वे ढायेंगे सर तुमको कटाना होगा॥
उधर संगीने वर्छे बहुत नुकीले होंगे।
खोल कर सीना तुम्हें तुरत अड़ाना होगा॥
मुल्क की खिद्मत है यह है न तमाशा हरगिज़।
आज जीवित हो कलका कुछ न ठिकाना होगा॥

अर्ज "जगदीश" की पीछे न बहाना करना।
समझ कर सत्याग्रह में नाम लिखाना होगा॥

[ग़ज़ल ५१]

मज़हवे हुब्बे वतन है कुछ न क़ौमी जोश है।
खौफ़ से सरकार के कुल हिन्द अब खामोश है॥
काम करने बाले सारे तीन तेरह हो गये।
जेल में कोई है कोई मुल्क से रूपोश है॥
हो गये आसार बेदारी के हैं मादूम अब।
ख्वाबे गफ़लत में हरेक अहले वतन मदपोश है॥
नौ जवानों में वतन के गिरगये इख़लाक़ हैफ़।
कोई शैदाये वुताँ है कोई वादा नोश है॥
शोभिये तक़दीर से अब रह गये महरूम हम।
वर्ना खुशहाली किये बीसों जहां हम पोश है॥
आगया मौसम खिजां का हो चुकी फ़स्लेवहार।
क्या वजह है वुल वुले भारत जो तू खामोश है॥
कौन सुनता है फ़लक अब तुझसे दीवानेकी बात।
गीत गाता है बफ़ादारी के जो जी होश है॥

सैय्याद के डर से

[ग़ज़ल ५२]

कहूं क्यों कर ज़वा तो बन्द है सैय्याद के डर से।
टपकती दासतां मेरी है मेरे दीदये तरसे॥
ज़वा खोली ही थी गुलशन में बस सैय्याद आपहुंचा।
तमन्ना दिलकी दिल में रहगई मेरे मुकद्दर से॥

है कांटे बालो पर सारे फँसा कर जाल में पहिले।
कफ़स है और मैं हूं कर दिया वेघर मुझे घरसे॥
ज़माने की यह नैरंगी नहीं क्या कुछ दिखाती है।
कल गुलशन का मालिक था वह आज यक फूलको तरसे॥
रिहा करके दे वादे सैकड़ों और फिर मुकरजाना॥
ये मज़लूमों की आहें टल नहीं सक्तीं तेरे दरसे॥
तुलू होने लगा सूरज है मशिरिक में इधर कलियां।
चटखती हैं खिलेंगे गुंचे गुलशन में नये सरसे॥
सुना है बाग़वां सैय्याद में अब कुछ होगई अन बन।
हवा बदली है शायद हो रिहाई फिर सितमगर से॥
कफ़े अफ़सोस मल २ कर सर धुनेंगे तंग दिलवाले।
गले लग २ मिलेंगी जब ये बुल २ फिर गले तरसे॥
नये पौधे उगें शाखें फलें फूलें मुवारिक हो।
घटा ये प्रेम की अमृत अगर बरसे तो यों बरसे॥

[होली ५३]

गान्धी ने कैसी धूम मचाई॥ टेक॥
असहयोग की लै पिचकारी, रंग अवीर उड़ाई।
सकल बिदेशी दूर करो अब, रंग स्वदेशी रँगाई॥
सकल मन मैल मिटाई॥ गान्धीने॥
नागपूर कांग्रेस में लाकर, सम्मति पास कराई।
वाय काट सब करहुं बिदेशी, मौटिया की चाल चलाई।
सबहिं सन्यास सिखाई॥ गान्धी ने॥
सरकारी इसकूलन से अब, बालक लेहु हटाई।
क्या दरकार गुलाम बने से, चरखा देहु सिखाई।
घरे घर देहु चलाई॥ गान्धी ने॥

अब काउन्सिल मति जाओ पियारे, दोष तुम्हें लगिजाई।
अधिकारी कुछ बात सुने नहिं, घात तो अपनी चलाई।
तुम्हें बदनाम कराई ॥ गान्धी ॥
गांव गांव में करघा मँगाकर, घर घर देहु बिठाई।
अपना कपड़ा आपहि बीनो, ना केहु माँगहु जाई।
ध्यान "शैलेन्द्र लगाई ॥ गान्धी ने ॥

[घनाक्षरी होली ५४]

सौरभ लगाय खूब अंगन अनूप सजि,
बनिठनि वीरो चलो घूमों खोर खोरी में।
कनक पिचूकन में केशर को रंगडारि,
लालजू गुलाल और अबीर भरि झोलिन में।
सांवरे सुजान तान मारो तकि गोरन पै,
चूको मति रुद्र सोहि ऐसे बरजोरन पै।
बावरे अजान ठगे ठाड़े हो यहां धौं कहां,
चांकुरे निशंक होय मेलो अंक होरी में।

[होली ५५]

आवो सब मिल होली मनाये, देश भारत को उठायें।
अरुण रंग प्राची ते लायें, कुम कुम ऐक्य बनाये।
तामें भरि स्वातंत्र मंत्र जपि, सबपै घोरि बहायें।
दुष्टन को मारि भगावें ॥ आवा ॥
बीर अबीर उड़ाय गगन में, जय को ढोल बजायें।
सुख स्वतंत्र सुरमति को मदिरा, छकि२ धूम मचायें।
विदेशियों को नाच नजायें ॥ आवो ॥

जीर्ण वस्त्र उतार मातु को, नूतन पट पहिरायें।
तापे पुष्प अलंकृत करिके, छबि में छटा बढ़ायें।
तबै ऋषि पुत्र कहायें ॥ आवो ॥
रुद्रसोंहि सांची यह मानो, सब जन अब मिल जायें।
याही पै तन, मन, धन, वारें, वूड़त देश बचायें।
हिन्दू हित हेत विकायें ॥ आवो ॥

स्त्रीशिक्षा

[बहरतवील कव्वाली ५६]

सीखो विद्या सभी मेरी प्यारी वहन
न रखो कुछ कसर बात मानो मेरी।
आँखें खोलो जगो देखो अपनी दशा
रो रही हिन्द माता हमारी तेरी ॥
मर्द तो लग चुके हैं सभी काम में
देश सेवा का व्रत ठान मनमें लिया।
पर तुम्हारा तो आलस भी छूटा नहीं
जिसने तुमको कहीं कुछ न करने दिया ॥
माता तेरी ही आशा करे है अभी
तेरी सन्तान ही सुख देगी कभी।
पर तेरा हाल तो हाल बेहाल है
तू भला ध्यान इस पर भी देगी कभी ॥
पहनो खद्दर सदा सर्वदा अपने बच्चों को
कभी यह भी सिखाया करो ।
हम हैं भारत निवासी हटेंगे नहीं
सत्पन्थ उनको बहनों दिखाया करो ॥

विनती शैलेन्द्र की है यही भगिनयों
तुम भी हमें कुछ मदद अबकरो ।
है ज़रूरत तुम्हारी ही रण भूमि में
बनके दुर्गा परिश्रमी सफ़ल मम करो ॥

तर्ज गाली विद्या विषय

[५७]

बिन विद्या भारत देश लुट गया। सुन सजनो
विद्या गई अविद्या आई जबसे भारत देश ।
घर घर में भाई में भाई नित प्रति होत क्लेश ॥
रहा न कोई विद्या का धनी ॥१॥
हेल मेल के पौधा फूट गये घर घर उपजी फूट
फूट खाय ये हुये बावले ले गये विदेशी धनलूट
दग़ा वाज़ों कीआंखे बनी ॥२॥
बरुअन वेन वजाय वजाय कै मोहि लिये विष पर काले
वन्द पिटारें में करि लींने सारे ज़हर निकाले
छीन ली माथे की मनी ॥३॥
ख़्याल करो और सोचो मनमें जिन्हें कहो तुम काले
नृप विदेशी अमरीका के अर्जुनदादा के साले
हमारी जब बनिता थी बनी ॥४॥
रामचन्द्र लक्ष्मण जाति और हनूमान से बोर
मेघनाद रावण से मारे बड़े बड़े रण धीर
उन्होंने ऐसे ही ना मानी ॥५॥
दुर्योधन समझायो कृष्ण ने मानों नहिं हर वार
सुई बराबर राज न दूंगा कुटम्ब की कराली छार
लड़ाई जब दोनों में ठनी ॥६॥

जिसके राज में प्रजा दुःखी हो फिर वह कैसा राज
गर्वनमेन्ट से प्रजा दुखी है नर्क पड़ेगो यह राज
रामायण देखो खोल अपनी ॥७॥
रिस्ते दारों की सम्पति लेकर भोग रहे तुम राज
अबहूं मान कछु ना विगड्यो देदो वेगि स्वराज्य
सदा नाय काऊ की बनी ॥८॥

[ग़ज़ल ५८]

जो चाहता है हयाते अबदो मिटे हुओं की मिसाल होजा—
फ़लक के जोरो सितम के आगे तु अपनी जाती की ढाल होजा
शमअ के मानिन्द खुदतु जल कर जो रोशनी बख्श दे जहाँ को
तो नाम हो जाये अमर तेरा ये जिन्दगी ला जबाल होजा-१॥
अगर तु क़ौमीं धरम की ख़ातिर ज़मीन पर पाये माल होजा
तो नाम शोहरत के आसमाँ पर पहुंच के माहे हिलाल होजा॥२॥
धरम का दरिया बहा दिया है ऋषी दयानन्द ने जन्म लेकर-
धरम की दौलत से तूभी ग़ाफ़िल उठ अब तो बस मालामाल होजा ॥३॥
यही तमन्ना यही है ख्वाहिश यही मेंरे दिल की आरज़ू है
धरम से बहरा बर अपने यारब तु अपनी जाती का लाल होजा४॥
अगर तु गौतम कपिल नकुल कृष्ण की ही जगमें मिसाल होजा
तो आज फिर इस जहाँ की ज़ीमत ये तेरी क़ाली ही खाल होजा॥
लिया है अपने धरम की ख़ातिर जो हाथ में कासये गदाई
सवाल क्यों करता है ज़ुबांसे तुखुद ही शक्ले सवाल होजा॥६॥
अगर सिदाक़त की फूंक दे रू बदन में जाती के आज कोई
तो हफ़्ते इफ़लाक़ा के लिये फिर मिटा न इसका मुहाल होजा॥७॥
मैं वो नमूना हूं ना तवानी का आज ज़ेरे फ़लक मुसाफ़िर
के तीरे दुश्मन भी आते आते मेरे जिगर तक निहाल होजा॥८॥

होने दो

[ग़ज़ल ५६]

मुनक़्क़स अपने दिलपै हिन्द की तसवीर होने दो।
क़दम से उसके अपना सीना पुरतन वीर होने दो॥
कभी उलझन न डालो क़ौम के कामों में तुम कोई।
तुम्हारे दर्दो ग़म की होती है तदबीर होने दो॥
बढ़ाए रक्खो हिम्मत बुज़दिली को मत फटकने दो।
न इनको अपने पावों की कभी जंजीर होने दो॥
चलन से, इल्म से, गैरत से, हिम्मत से, शुजाअत से।
न मुल्को क़ौम की हरगिज़ कहीं तहकीर होने दो॥
अगर आये हो दुनिया में उठाओ लुत्फ़ आज़ादी।
किसी के हाथ में तुम अपनी मत तकदीर होने दो॥
बहुत लिक्खे गये अफसान इश्को उन्सो उलफत के।
हिकायत हुब्ब क़ौमी की भी अब तहरीर होने दो॥
करो खिदमत वतन की शौक़ से, दिल से मुहब्बत से।
न मुल्की काम में कोई कभी तक़सीर होने दो॥
बहुत वादे टले हैं अहदो—पैमां का भरोसा क्या।
तलब अपने करो हक़ तुम न अब ताख़ीर होने दो॥
न रोको क़ल्ब की आवाज़ तुम रौशन जमीरों से।
किसी को है अगर इस अम्र में तकरीर होने दो॥
मज़े लो दर्द के रह रह के मुल्कों क़ौम के ग़म से।
जिगर के पार तो अपने ज़रा यह तीर होने दो॥
तुम्हारी आहो—ज़ारी यह कभी ज़ाया न जायेगी।
खिच आयेगी खुद आज़ादी ज़रा तासीर होने दो॥

॥ ओ३म् ॥

❀ वन्देमातरम् ❀

भारत सपूतो उठो ! अपने कर्तव्य को समझो !!
देश की सेवा करो !!!

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है॥
अन्धकार है वहां जहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है॥

प्रिय पाठको !

संसार में जाति अथवा देश की उन्नति तथा अवनति करने के हेतु उस जाति अथवा देश का इतिहास एवं साहित्य ही मुख्य साधन हुआ करता है। जिस जाति का इतिहास एवं साहित्य सच्चा और बीरता पूर्ण विद्यमान रहता है, संसार में वही जाति सर्वोपरि उन्नति के शिखर पर चढ़ा करती है, और जिसका सच्चा इतिहास ही लोप हो जाता है संसार में वही जाति अधोगति के ग ढे में ड़िरकर पद्दलित हुआ करती है।

कहने का तात्पर्य्य यह है कि किसी जाति अथवा देश की उन्नति या अवनति का दारोमदार उस देश के इतिहास एवं साहित्य के ऊपर ही निर्भर है ! अतः इतिहास एवं साहित्य का सुरक्षित रखना और सच्चे इतिहास एवं साहित्य का प्रचार करना परमावश्यक है । जिन देशों का साहित्य एवं

इतिहास सुरक्षित रहा है वे देश गिरते २ आज भी संभल गये हैं, जैसे अमरीका, जापान इत्यादि !

और जिन देशों का सच्चा इतिहास व साहित्य ही मिट गया है वे देश आज भी संसार में पद्दलित और तिरस्कृत हो कर अधोगति को पहुँच चुके हैं, जैसे हमारा भारत-वर्ष ! भारत की आधुनिक अधोगति का मुख्य कारण भी (जहाँ तक हमने अनुसन्धान तथा विचार किया है) प्राचीन सच्चे इतिहास एवं साहित्य का लोप हो जाना ही है। इसमें सन्देह नहीं कि विदेशियों ने भारत के प्राचीन पवित्र इतिहास एवं साहित्य पर कुठाराघात कर मटियामेट तथा कलङ्कित करने और लांच्छन लगाने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी ! इतना ही नहीं जहां तक उनसे हो सका उन्होंने हमारे सच्चे पवित्र इतिहास एवं साहित्य पर भरसक पानी भी फेरा।

परन्तु ध्यान रहे किसी भी वस्तु का बीज नष्ट नहीं हुआ करता। इस सिद्धान्तानुसार प्राचीन इतिहास एवं साहित्य को नष्ट करने तथा जलाने पर भी कुछ न कुछ चिन्ह स्वरूप आज भी बाकी हैं ! यही कारण है कि भारत की अधोगति होने पर भी आज पर्यन्त भारत वासियों में अनेक ऐसी बातें पाई जाती हैं जो दूसरे देशों के जन साधारणों में नाम मात्र भी नहीं मिलती ! हां प्राचीन उन्नति के मुकाबिले में तो इस समय भारत की अवश्य ही अवनति हुई है परन्तु इस अवनति पर सोच करना व्यर्थ है।

कालचक्र की गति के अनुसार गिरना उठना यह तो लगा ही रहता है क्योंकिः—

उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है।
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है॥

अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति कला।
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन हो क्या भला॥
होता समुन्नति के अनन्तर सोच अवनति का नहीं।
हां सोच तो है जो किसी की फिर न हो उन्नति कहीं॥

बस उपरोक्त ईश्वरी नियमानुसार ही भारत को पुनः असली स्वरूप में लाने के हेतु अतिकाल से हम लोगों की हार्दिक अभिलाषा थी कि मातृ भाषा हिन्दी में एक नवीन उच्च कोटि का मासिक पत्र और ग्रन्थमाला प्रकाशित की जाय जिसमें समयानुसार समय समय पर भारत सन्तानों के सोये हुये सद्भावों को जागृत करने के हेतु उत्तमोत्तम भावपूर्ण लेख, कविता इत्यादि छपा करें। अपनी इस शुभेच्छा की पूर्ति के हेतु गत वर्ष हम लोगों ने पत्र का समस्त प्रबन्ध भी कर लिया था, और पत्र प्रकाशित कराने वाले ही थे कि इसी दौरान में हम लोगों के ऊपर सरकार की विशेष कृपा दृष्टि हुई! और हमारे मुख्य कार्य कर्ताओं में से कई सज्जनों को नौकरशाही १२४ धारानुसार महामान्य सम्राट् के घर का निमन्त्रण पत्र देने के अतिरिक्त एक एक वर्ष कारावास का दण्ड दे कर अब उन्हें और भी परमोत्साहित कर दिया है। बस इसी कारण गत वर्ष तो हमारी इच्छाओं पर पानी फिर गया था। परन्तु अब ईश्वर की कृपा से हमारे कार्य कर्त्तागण एक एक वर्ष कृष्ण भवन में कठिन तप करने के पश्चात् कर्मयोगी बन कर वापिस आ गये हैं। और देश तथा मातृ भाषा की सेवा करने के हेतु कार्य क्षेत्र में उतर पड़े हैं! इसी से हमें अब पुनः नये सिरे से अपनी शुभाभिलाषा के पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। और अनेक महानुभावों के सानुरोध करने पर हमने इस कार्य में अपने जीवन लगाने का निश्चय

कर लिया है। इतना ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से काशी में "नवयुवक महामण्डल" की स्थापना कर के, उसी के अन्तर्गत कार्य करना भी प्रारम्भ कर दिया है। भारत की वास्तविक प्राचीन ऐतिहासिक अपूर्व छटा का दिग्दर्शन करने, तथा भारतसन्तान के सोए हुए सद्भावों को जगाकर पुनः सञ्चरित करने; और कर्म योगी बन कर निज कर्तव्य पालन करने के हेतु, हमने काशी से "नवयुग" नामक हिन्दी में उच्च-कोटि का आदर्श सचित्र मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें ऐतिहासिक वैज्ञानिक, धार्मिक, कलाकौशल, स्त्री शिक्षा सम्बन्धी, स्वराज्य विषयक, उपन्यासिक, नाटक, गल्प, व्यङ्गोक्ति, इत्यादि इत्यादि समयानुसार सभी प्रकार के लेख तथा कवितायें छपती हैं। आकार प्रकार सरस्वती का सा है। इतने उत्तम सचित्र मासिक पत्र का मूल्य भी सर्व साधारण की सुबिधार्थ केवल ४॥) साढ़े चार रुपये मात्र हो रक्खा है। पत्र नियमित रूप से प्रत्येक मास के अन्त में ठीक समय पर प्रकाशित हो जाता है। संसार के सभी सुप्रसिद्ध लेखकों के लेख इस "नवयुग" पत्र में छपते हैं। अतः आप भी आज ही वार्षिक पूरा अथवा अर्ध मूल्य अग्रिम मनोयार्डर द्वारा भेजकर ग्राहक बन जाइये अथवा ॥) आठ आना के टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा लीजिये। स्मरण रहे! "नवयुग" के समस्त ग्राहकों को वर्ष के अन्त में एक वार उनकी इच्छानुसार "नवयुग ग्रन्थमाला" की कोई भी दो पुस्तकें उपहार स्वरूप में भेंट की जायंगी।

२-साधारण जनता के सन्मुख समयानुसार उत्तमोत्तम भावों को रखने के हेतु हमने "नवयुग ग्रन्थ माला" के नाम से एक ग्रन्थ माला भी निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें

समय तथा आवश्यतानुसार विविधि विषयों से विभूषित हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित कर अल्प मूल्य में सर्व साधारण की भेंट की जाती हैं। ग्रन्थमाला में आठआना अग्रिम प्रवेश शुल्क देने पर स्थाई ग्राहक बनाये जाते हैं! कौंग्रेस कमेटियों, किसान सभाओं,सेवा सम्मतिओं,आर्य समाजादि संस्थाओं को वितीर्णार्थ अधिक पुस्तके मंगाने पर तथा स्थाई रूप से "नवयुग" मासिक पत्र के ग्राहकों तथा विद्यार्थियों को समस्त पुस्तकें पौने मूल्य में दी जाती हैं। देश के नाते हमारी आपसे सादर प्रार्थना है कि आप इस ग्रन्थमाला के स्थाई ग्राहक बन कर और दूसरों को बनाकर देश के कार्य में हाथ बटावें।

ध्यान रहे! "नव युग ग्रन्थमाला" और "नवयुग" मासिक पत्र द्रव्योपार्जन अथवा व्यापारिक इच्छा से नहीं वरन हिन्दी प्रचार तथा स्वदेश सेवार्थ ही निकाले गये हैं। आप विश्वास रखिये! उपरोक्त दोनों कार्यों से यत्किञ्चित जो कुछ भी आय होती है, वह सब देश सेवार्थ ही व्यय की जाती है। अर्थात इस आय से मेलों तथा ग्रामों में निर्धन मनुष्यों को बिना मूल्य पुस्तके बितीर्ण कराई जाती है। ग्रामों में उपदेशक, भजनीकों से भारत सुधार सम्बन्धी व्याख्यानों तथा भजनों द्वारा प्रचार कराया जाता है, और यथा समय आवश्यक्तानुसार इसी भांति से हिन्दी तथा देश सेवा के अनेक कार्य किये कराये जाते हैं।

देश के इस महान कार्य में हमारा हाथ बटाना आप का परम कर्तव्य है।

अतः आप हमारी पुस्तकों और मासिक पत्र के ग्राहक बना कर प्रचार करें।

और लेख कविता इत्यादि लिख कर प्रकाशनार्थ हमारे पास भेजने की कृपा करें।

"नवयुग" के स्थाई ५ पांच ग्राहक बनाने वाले महानुभावों के। छै मास और १० दस ग्राहक बनाने वाले महानुभावों को एक वर्ष पर्यन्त "नवयुग" मासिक पत्र बिना मूल्य दिया जायगा। इस के अतिरिक्त लेख, कबिता इत्यादि सर्वोपरि होनेपर वर्ष के अन्त में लेखकों को उचित पुरस्कार, पदक इत्यादि भी दिये जायंगे।

हमें पूर्ण आशा है कि आप यथाशक्ति, यथायोग्य लेखादि से अथवा ग्राहकादि बनाकर देश के इस महान कार्य्य में हमें सहायता प्रदान करेंगे।

हमें दृढ़ विश्वास है कि आप यथाशक्ति इस कार्य में हमारा हाथ बटाकर स्वदेश सेवा तथा परोपकार करते हुए यश और पूण्य के भागी बनेंगे।

निवेदकः—

भवदीय
मंत्री नवयुक महामण्डल
काशी

व्यवस्थापक
प्रकाशक विभाग,
नवयुक महामण्डल
काशी।

पढ़ने योग्य अपूर्व पुस्तकें ।

यजुर्वेद भाषा भाष्य	५)
मनुस्मृति भाषानुवाद	२)
न्यायदर्शन भाष्य	१॥)
वैशेसिक दर्शन भाष्य	१॥)
योगदर्शन भाष्य	॥।)
सांख्यदर्शन भाष्य	१)
वेदान्त दर्शन भाष्य	२)
मीमांसा दर्शन	१०)
संस्कृत सीखने की पुस्तकें	॥।=)
उपदेशमंजरी	॥।)
स्वामी दर्शनानन्दकृत	
दर्शनानन्द ग्रन्थसंग्रह	२॥)
दृष्टान्तसागर	२)
उपनिजदप्रकाश	२॥)=
भारत वर्ष की वीर विदुषी स्त्रियां	॥)
भारत वर्ष की वीर मातायें	॥।)
भारत की क्षत्राणी	॥।)
बनिताविनोद	॥=)
बाला बिनोद	।=)
बालशिक्षा दो भग	≡)
भजन प्रकाश चार भाग	॥।=)
मुसाफिर भजनावली	=)॥
ईश्वर भजन	॥।)
सङ्गीत सागर	=)॥

राष्ट्रीयसंगीत सागर	॥)
राजपूतों की बहादुरी	१)
आर्योंका अत्मोत्सर्ग	२)
वर्निपर की भारत यात्रा	२)
वङ्गविजेता	१॥)
दुर्देशनन्दिनी	१।)
आदर्शनगरी	१॥)
संसार	१)
मेजिनी	॥)
हिन्दू संगठन	-)॥
प्रतापसिंह का प्रताप	।=)
गान्धी गुणादर्श	।=)
मनुष्यकी अवस्था पर विचार	।॥
तिलक जीवनादर्श	।)
ईश प्रार्थना	-)॥
गान्धी दर्शन	१)
पुराण तत्व प्रकाश	२)
कण्ठी जनऊ का विवाह	=)
स्वर्ग में महासभा	।)
स्वर्ग में सब्जेक्ट कमेटी	≡)
भोट्टू जाट और पादरी साहब	=)

इसके अतिरिक्त धार्मिक, सामाजिक, उपन्यास, ऐतिहासिक, स्त्री शिक्षा तथा बालकोपयोगी सभी प्रकार की पुस्तकें मिलेंगी।

पताः—सरस्वतीन्द्र पुस्तकालय बनारस सिटी।

ॐ

लेखक तथा सम्पादक के कार्य्यक्रम की पद्धति

भारतीय राष्ट्र निर्माण के लिये सदैव प्रयत्न शील रहना अर्थात् भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं राष्ट्र धर्म का प्रचार करना। हिन्दु मुसलमानों में सच्चा क़ौमी मेल सदैव बनाये रखने का प्रयत्न करना, और भारत के कोने कोने अर्थात् बड़े बड़े शहरों के महलों से लेकर ग्रामों के टूटे फूटे खँडहरों तक में भी स्वराज्य तथा कांग्रेस के भावों का प्रचार करना। शहर तथा ग्रामों में, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, कुरीतिनिवारण स्त्री सिक्षा, अनाथरक्षा इत्यादि विषयों में समयानुसार वक्तृता गान एवं लेखों, पुस्तकों और समाचार पत्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं धार्मिक भाव भर कर भारत के प्रत्येक बच्चे बच्चे को स्वात्मावलम्बी एवं कर्मयोग पथ गामी बनाना है।

पत्र व्यवहार का पता—

व्यवस्थापक

" हिन्दी नवयुग " कार्य्यालय

काशी